ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24 अंक - 02 अप्रैल-II-2022 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

किसानों में भारत का भविष्य बदलने की क्षमता : गडकरी

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा 'आत्मनिर्भर किसान अभियान' का हुआ भव्य शुभारंभ

किसान की आर्थिक मानसिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने पर हुई विस्तारपूर्वक चर्चा

नागपुर-विश्वशांति सरोवर,जामठा (महा.)। केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने किसानों की आर्थिक स्थिति पर चिंता जताते हुए जैविक खेती को अपनाने पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि किसानों को जैविक खेती को अपनाना चाहिए

क्योंकि इसमें कम लागत में बेहतर उत्पादन पाया जा सकता है। देश के किसानों में भारत का भविष्य बदलने की क्षमता है। ब्रह्माकुमारीज़ के जामठा स्थित विश्व शांति सरोवर में आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आत्मनिर्भर किसान अभियान और आध्यात्मिक संग्रहालय का ऑनलाइन उद्घाटन करने के पश्चात् वीडियो संदेश में नितिन गडकरी ने किसानों को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि किसानों को खेती के साथ ही उत्पादित अनाज की मार्केटिंग पर भी ध्यान देना चाहिए। उन्होंने किसानों का आह्वान किया कि भारत में चावल व गेहूं का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है। देश को तेल के लिए विदेशों पर निर्भर होना पड़ता है। लिहाज़ा किसानों को चाहिए कि वे भारत में तिलहन के उत्पादन पर ज़ोर दें। इससे भारत सही मायने में आत्मनिर्भर बनेगा। उन्होंने किसानों को आनेवाले समय में गाय की अच्छी नस्ल के लिए टेस्ट ट्यूब का प्रयोग करने की सलाह दी। गांव व खेत का पानी खेत में ही प्रयोग होना चाहिए। साथ ही उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इस क्षेत्र में किये जा रहे विभिन्न प्रयासों की सराहना की। ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. तृप्ति दीदी ने कृषि में आत्मनिर्भरता लाने पर ज़ोर दिया तथा कहा कि आज खेती में जो रासायनिक खाद का अधिक उपयोग हो रहा है, यह मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और किसानों को भी आर्थिक रूप से नुकसान उठाना पड़ रहा है। उन्होंने शाश्वत यौगिक खेती पर ज़ोर देते हुए कहा कि देश का किसान आत्मगुणों के आधार पर आत्मनिर्भर बनेगा।

कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने अभियान के लक्ष्य व उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्राचीन व यौगिक खेती पर ज़ोर देना होगा। साथ ही ग्रामीण युवाओं को खेती की ओर आकर्षित करने

के लिए अध्ययन प्रशिक्षण देना ज़रूरी है। राज्य के पशुसंवर्धन मंत्री सुनील केदार ने कहा कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को कैसे विकसित किया जा सकता है इस पर अधिक ज़ोर देने की ज़रूरत है। कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू भाई ने कहा कि प्रभाग का मूल लक्ष्य है कि हर आत्मा स्वयं की पहचान के साथ परमात्मा से सम्बंध जोड़े। इससे मन, बुद्धि हमारे कंट्रोल में आ जाती है और आत्मनिर्भरता बढ़ती है। ब्र.कु. महेंद्र ठाकुर ने अभियान के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि आत्मनिर्भर किसान राष्ट्रीय कार्यक्रम है जिसके माध्यम से एक लाख गांवों तक पहुंचने का उद्देश्य है। नागपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रजनी दीदी ने दादाजी भुसे सहित सभी अतिथियों का स्वागत किया। ब्र.कु. सुनंदा दीदी,पुणे ने कृषि में राजयोग के प्रयोग की विधि बताते हुए गहन अनुभूति कराई। मौके पर विधायक मोहन मते, जिलाधिकारी आर.विमला, जिला परिषद् अध्यक्ष रश्मि बर्वे, नासुप्र ट्रस्टी संदीप इटकेलवार, कृषि नागपुर विभाग के संयुक्त निदेशक रवींद्र भोसले, परिणीता फुके, सेंट्रल इंस्टीट्यूट फॉर कॉटन रिसर्च नागपुर के वाय.जी. प्रसाद, स्थानीय सह संचालिका ब्र.कु. मनीषा दीदी, माउण्ट आबू से ब्र.कु. देव भाई, ब्र.कु. दशरथ भाई, ब्र.कु. सरिता दीदी,धमतरी, प्रेम प्रकाश भाई सहित बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

किसानों की स्थिति में बदलाव ज़रूरी

समारोह में प्रमुख अतिथि सांसद कृपाल तुमाने ने कहा कि किसानों को मार्गदर्शन देना ज़रूरी है, पर्यावरण परिवर्तन व उसके प्रभाव से अवगत कराना ज़रूरी है, किसानों को फसलों में बदलाव करना ज़रूरी है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति में बदलाव हो सकता है।

अध्यात्म की राह पर चलकर जीवन में खुशहाली ला सकती हैं महिलायें

चरोदा-छ.ग.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'महिलाएं : नए भारत की ध्वजवाहक' विषयक कार्यक्रम में लता मढ़रिया,समाज सेविका ने कहा कि महिलाएं परिवार में रहते हुए अगर मर्यादित होकर चलती हैं तो घर में शांति बनी रहती है और अध्यात्म की राह पर चलकर जीवन में खुशहाली ला सकती हैं। सीता साहू,पूर्व अध्यक्ष,नगर पालिका निगम ने कहा कि माँ का फर्ज़ है कि बेटी और बेटे को समान दर्ज़ा दे। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था का नारी उत्थान में विशेष योगदान है। माता-पिता का कर्त्तव्य है कि बच्चों को संस्कारित करके उनके जीवन को उज्जल करें। चंद्रकांता मांडले,पूर्व महापौर ने कहा कि महिला को जब स्वयं के नाम से जाना जाता है तो वह उसके मेहनत व समर्पण का ही परिणाम है। अंजू राजपूत,प्राचार्या,गंगोत्री स्कूल चरोदा ने कहा कि आज बहनों को हर क्षेत्र में शिक्षित होने की आवश्यकता है तथा माता-पिता को भी चाहिए कि वह अपने बच्चों को सही चीज़ें देखने और सुनने को प्रेरित करें। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शिवानी बहन ने कहा कि हम बड़ी-बड़ी बातों का ध्यान तो रखते हैं लेकिन छोटी-छोटी बातों को भूल जाते हैं। अगर हम इन सभी बातों का ध्यान रखें तो हमें हर व्यक्ति में अच्छाई व गुण ही दिखाई देंगे। उन्होंने बताया कि ब्रह्माकुमारीज़

द्वारा महिलाओं हेतु अनेक कार्यक्रम समय प्रति समय रखे जाते हैं। ब्र.कु. रवि बहन ने संस्था के कार्यों एवं उद्देश्यों से सभी को अवगत कराया। आभार ब्र.कु. किरण बहन एवं मंच संचालन ब्र.कु. हरीश भाई ने किया। कार्यक्रम में स्थानीय श्री मानस भजन मंडली ने अपने गायन वादन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

महाशिवरात्रि के महान पर्व पर शिव दर्शन आध्यात्मिक मेले का भव्य आयोजन

धमतरी-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'महाशिवरात्रि' एवं 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत 'शिव दर्शन आध्यात्मिक मेला' का भव्य उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर नगर निगम महापौर विजय देवांगन, पूर्व विधायक हर्षद मेहता, कांग्रेस कमेटी जिलाध्यक्ष शरद लोहाना, मोहन लालवानी, नगर निगम नेता प्रतिपक्ष नरेंद्र रोहरा, वरिष्ठ साहित्यकार सुरजीत नवदीप, पीजी कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. सीएस चौबे, प्रखर समाचार के संपादक दीपक लखोटिया, भाजपा जिला महामंत्री कविंद्र जैन, भाजपा महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष बिथिका विश्वास, भाजयुमो जिलाध्यक्ष विजय मोटवानी, सरला जैन, पार्षद सुशीला तिवारी, नीलू डागा, मिथलेश सिन्हा, सरिता असायी, नीलू पवार, ईश्वर देवांगन, आकाश गोलछा, सोमेश मेश्राम, दिलीप

देवांगन सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे। इस अवसर पर स्थानीय संचालिका ब्र.कु. सरिता दीदी ने महाशिवरात्रि महापर्व का आध्यात्मिक महत्व बताते हुए मेले के बारे में अन्य जानकारियां दीं।

मेले के मुख्य आकर्षण केन्द्र...

- आत्मनिर्भर किसान मॉडल
- नशामुक्ति अभियान मॉडल
- सर्वात्माओं के पिता
- भारत कल आज और कल
- 40 फिट शिवलिंग दर्शन
- जैविक यौगिक खेती
- आध्यात्मिक गेम ज़ोन
- मेडिटेशन रूम
- गॉडलीवुड थिएटर
- 12 ज्योतिर्लिंग दर्शन
- अज्ञान नींद में सोए हुए कुम्भकर्ण को जगाने वाली झाँकी

देखो... व्यर्थ हमें कहाँ ले जा रहा...!

हम कितने भाग्यशाली हैं जो संसार के 'असार कुचक्र' से छूट गये। हमने जन्म-जन्म इस कुचक्र से छूटने के न जाने कितने प्रयत्न किये, कितनी ही कोशिश की, किन्तु जितना ही उससे छूटने की कोशिश की उतना ही उस दलदल में और ही फंसते गये। न जाने हमने कितने पंडितों-विद्वानों के आगे चक्कर काटे होंगे, पर हमें असफलता ही हाथ लगी। इसका मतलब ये था कि जिस पर हमारी आस्था थी वे स्वयं ही इससे मुक्त नहीं थे। तो भला वे हमें कैसे मुक्त कर पाते! आज की एडवांस जनरेशन में इससे छूटने के लिए कई पॉज़ीटिव थिंकिंग का सहारा ले रहे हैं तो कई योगासन का। पर ये सब करते हुए भी पूर्णतः सफल नहीं हो पा रहे। हमने हाल ही में देखा कि एक मशहूर एक्टर जो रोज़ योगासन करता था, जिम में जाता था, शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट भी था, फिर भी हार्ट अटैक में अपनी जान गंवा दी। प्रयास तो करते हैं सभी अपने-अपने लेवल पर, पर फिर भी जीवन में कुछ न कुछ त्रुटियां रह ही जाती हैं। परिणामस्वरूप वे चाहते हुए भी उससे निजात नहीं पा सकते।

ऐसे वक्त में हम भाग्यशाली हैं कि हमें परमात्मा के द्वारा सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ और हम उसी राह को चुनकर आगे बढ़ रहे हैं। उस राह को हमने ही चुना क्योंकि हमें पता है कि इससे ही हमारा जीवन सफल होगा। होगा भी क्यों ना! ये बात दूसरों के लिए साधारण हो सकती है किंतु ऐसे सांसारिक कुचक्र के मध्य में हमने उसको जाना भी और पहचाना भी। अब परमात्मा का कहना है कि बच्चे अब छोड़ो सब व्यर्थ की बातें, और छोड़ो दुर्गुण देखने की आदत को, इसमें ही आपका कल्याण है। इसके लिए कल्याणकारी प्रभु ने हमें अनेक विधियां, युक्तियां अथवा उपाय बताये हैं जिनसे आत्मा में घुसे हुए व्यर्थ व बुरे संस्कार बाहर निकल जाते हैं और उससे पीछा छूट जाता है। सब बातों का तो यहाँ उल्लेख करना संभव नहीं, परंतु एक ऐसी बात को हम यहाँ लिपिबद्ध करना चाहेंगे जो कि किसी अंश में हमारी दृष्टि-वृत्ति को विकृत होने से बचा सकती है।

ब्र.कु. गंगाधर

वो ये है कि कई बार हम किसी व्यक्ति से किसी दूसरे की निंदा सुनकर, चुगली सुनकर, शिकायत सुनकर, अफवाहें सुनकर उसे तुरंत मान जाते हैं और यह सोचने लगते हैं, 'अच्छा, वो व्यक्ति ऐसा निकृष्ट है! हमने तो उसके विषय में कभी ऐसा सोचा ही नहीं था।' हम उस बात की जांच नहीं करते बल्कि यह देखकर कि कहने वाला व्यक्ति हमारा घनिष्ठ मित्र है, विश्वास पात्र है, हमारे निकटतम है, हम उस बात को दूसरे व्यक्ति की अनुपस्थिति में मान जाते हैं। गोया हम उसकी पीठ में छुरी घोंपते हैं। चाहे वो व्यक्ति निर्दोष ही हो, हम दूसरे के कहने में आकर मन ही मन उससे घृणा करने लगते हैं। जिसे हम अच्छा समझते थे, उसे अब घटिया मानने लगते हैं और कई बार तो दूसरों को कहने लगते हैं कि 'अरे, तुम्हें मालूम है कि उस व्यक्ति को फलाने से लगाव-झुकाव है! वो झूठा है, ठग है, बेईमान है, वो केवल बाहर का दिखावा करता है। और वो बोलने में बड़ा चालाक है। बाकी उसमें ज्ञान-ध्यान कुछ नहीं है। तुम आगे से उससे बोलना छोड़ दो, उसका संग खराब है। मनुष्य कमर के साथ भारी पत्थर बांध कर पानी में उतरेगा तो डूबेगा ही। उसके संग वाले का भी ऐसा ही परिणाम होगा। सुना, तुम बचकर रहना।' ऐसी मानसिकता वालों का हाल भला क्या होगा!

जब हमारी ऐसी दृष्टि-वृत्ति हो जाये तो मनुष्य की अपनी बुद्धि मारी जाती है क्योंकि वह स्वयं अपनी बुद्धि में कंकड़-पत्थर इकट्ठे करने लगता है। गोया अपने ही डूबने की तैयारी करने लगता है। अपने को ज़िंदा जलाने के लिए अपनी चिता की लकड़ियां स्वयं चुनकर लाता है और उसकी सेज बनाता है। अपनी हत्या के लिए अग्नि स्वयं अपने हाथों से जगाता है। उसे किसी करनीघोर ब्राह्मण की आवश्यकता ही नहीं। शमशान पर जलाने की रस्म करने वाले जो पंडित होते हैं, उसकी भी उसे आवश्यकता नहीं। वो बिना मंत्र और रस्म के मर जाता है। किसी को उसका जनाज़ा उठाने की भी ज़रूरत नहीं। क्योंकि वह तो अपने आप ही चिता पर लेट जाता है। हाय! हाय! हम अपने जीवन से यह क्या करते हैं! जैसे कोई चंदन को जलाकर कोयला बना ले, वैसे ही हम अपने जीवन को भस्म कर लेते हैं। अब छोड़ो दुश्मनी को, उसके लिए छोड़ो नफरत को, नफरत को छोड़ने के लिए छोड़ो दूसरों की व्यर्थ बातों को सुनने और दूसरों के दुर्गुण देखने की आदत को। अगर यह एक बात भी हम पक्की कर लें तो भी हम उस रास्ते पर चल पड़ेंगे और खुशी, आनंद तथा मित्र भाव के झूले में झूलते रहेंगे। दृष्टि-वृत्ति को न बदला तो कृति नहीं बदलेगी। अगर कृति न बदली तो विकर्मों का बोझ बढ़ता जायेगा और पाप का घड़ा भरता जायेगा तथा जीवन दलदल में धंसता जायेगा। स्मृति-भ्रंस हो जायेगी और जिसकी स्मृति-भ्रंस हो जाये तो गीता के महावाक्य हैं कि उसकी केवल लुटिया ही नहीं डूबती, उसका तो सर्वनाश हो जाता है। तो हे मानव! अपने जीवन को एक बार बैठकर देखो, कहीं हमारा जीवन भी ऐसी आदतों के वश तो नहीं! हम अपने पैर पर खुद ही तो कुल्हाड़ा नहीं मार रहे! सोचो, चिंतन करो और ऐसी आदतों की चिता को तिलांजलि दे दो।

कौन कर रहा... हमारी परवरिश

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा ने हम सबको कितनी खुशी दी है, सदा इसी खुशी में झूमते रहो। खुशी की अनुभूति में खो जाओ। इस दुनिया में सबसे खुशनसीब हम ही हैं। बाबा ने इतनी खुशी की खुराक दी है जो खाते रहो और खिलाते रहो। खुशी गंवाओं नहीं, बातें तो होगी लेकिन बातें खुशी न ले जाएं, खुशी हमारी चीज़ है। सदा नशा रहे कि हम भगवान के बच्चे हैं, साधारण नहीं। अगर कोई पूछे आपका बाप कौन है? तो खुशी से वर्णन करेंगे। सदा इसी खुशी में उड़ते रहो। चेक करो शुरु से लेकर बाबा ने हमें कितने खज़ाने दिए हैं। यही सिमरण करते रहो। कितना भी बिजी रहो लेकिन हमारी खुशी हमारे साथ रहे। भगवान हमारा बाप होगा, यह कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। हमारा ड्रामा में भाग्य था जो बाबा के पास पहुंच गये। बाबा के घर में रहते हैं, खाते हैं यह कभी भूल नहीं सकता। अपनी चेकिंग करो कि दिन तो बीता लेकिन किसके साथ रहते हैं? कौन हमारी परवरिश कर रहा है? बहनें या बाबा। भगवान के लिए क्या सोचते और सुनते थे लेकिन वह हमारा हो गया, ये नशा रहे। भगवान हमारा बाप है जो प्रैक्टिकल में हमारी पालना कर रहा है। बाबा हमारा साथी है। बाबा कहने से कितनी खुशी होती है। ऋषि-मुनि भी चाहते हैं भगवान हमें दिखाई दे, महसूस हो लेकिन वह हमारा बन गया। जितना बाबा में मेरापन लायेंगे उतना खुशी और शक्ति मिलती रहेगी। बस बाबा में खो जाओ। बाबा के सिवाए हमारा है ही कौन। बाबा ने गैरन्टी दी है हमारी आज्ञा पर चलेंगे तो क्या से क्या बना दूँगा! संगम पर साधारण पार्ट है लेकिन खुशी कितनी है और चाहिए ही क्या। वह हमारे लिए क्या-क्या कर रहा है। सैलवेशन भी बाबा देता है, यज्ञ भी उसने रचा है।

हमसे कोई पूछे आपको कौन चला रहा है? भले बहनें निमित्त हैं लेकिन बाबा चला रहा है। इसी खुशी और खुमारी में हमारे रात-दिन बीतते हैं। कभी ऐसा समझा था कि हम भगवान के साथ रहेंगे, खायेंगे! यह भाग्य कम थोड़े ही है। जो अपने भाग्य का लाभ उठाते चलते रहते हैं उनकी निशानी सदा खुशनसीब की होगी। सारी दुनिया पड़ी है लेकिन भगवान ने मुझे निमंत्रण देकर बुलाया है। भगवान ने मुझे स्वीकार किया है। बाकी आपस में जो थोड़ी बहुत खिटपिट होती है, यह भी पेपर समझ पास होना है। हमारे जैसा खुश कोई और हो ही नहीं सकता। हमारे पर बाबा की नज़र पड़ गई। कोई भी बात हो लेकिन शक्ल न बदले क्या करूँ, कैसे करूँ! बाबा मेरे साथ है बस यह स्मृति में रखो।

हमारे मन में चार गुण सदा होने चाहिए

राजयोगिनी दादी जानकी जी

धीरज, मन को धीरज दो। जल्दी अधैर्य न हो जाओ, अधैर्यता व्यर्थ चिंतन में ले जाती है, दुःखी बनाती है।

सहनशीलता, इसकी गहराई में जायेंगे तो सहन करने की शक्ति आती है। मुझे सहन करना पड़ता है, माना दुःख हुआ। शक्ल में थोड़ा भारीपन आयेगा, कभी आँखें गीली भी हो जायेंगी तो वो सहनशीलता नहीं है।

सबके साथ हमारा मित्रता भाव हो। मेरा कोई शत्रु नहीं है। निंदा हमारी जो करे मित्र हमारा सोय। जो महिमा करे उसको मित्र मानो, जिसने कुछ निंदा की, गलत बोला, उसको शत्रु मानो, यह लक्षण ज्ञानी तू आत्मा के नहीं है। महिमा करने वाले तो मुझे खुश भी कर सकते हैं, आज महिमा करेंगे कल कुछ भी कर सकते हैं, इसलिए वो मेरे जीवन का आधार न हो। महिमा के आधार से मैं सेवा में रहूँ, उनसे मेरा अच्छा सम्बन्ध रहे... नहीं। रूहानियत है, ईश्वरीय स्नेह है, तो वह बात पूरी हो जायेगी। सहनशीलता सुखी रखेगी इसलिए हमारा हरेक के साथ मित्रता भाव कभी न छूटे, कुछ भी हो, मित्रता भाव में सब कुछ समा लेते हैं। बाबा ने जैसे हरेक को अपना मित्र माना। बात आती हैं चली जाती हैं, बातों के कारण हमारे आपसी सम्बन्ध ठीक न रहें, यह मेरे लिए शान नहीं।

गम्भीरता का गुण, यह गुण हमें ज्ञानी तू आत्मा बना देता है। जैसे बाबा मुस्कुराता कैसे है, बाबा की मुस्कुराहट में साधारणता तो नहीं है ना! शब्द थोड़े, रूप बड़ा स्नेह और शक्ति वाला हो, साधारण न हो।

दूसरा रूहानियत में रमणीकता हो। कोई सीन ऐसी आ जाये तो सीरियस न बन जायें। सीन देखके सीरियस हो जायेंगे तो हमारे मन का इफेक्ट तन पर भी आयेगा, वायुमण्डल में भी आयेगा। वायुमण्डल को सदा शांत, सच्चाई, प्रेम वाला रखना, उसमें दुःख की लेन-देन का बिजनेस बंद हो जाये। अगर थकावट वाला या सीरियस रूप है तो दुःख की लेन-देन का वायुमण्डल हो जाता है। हमें वो नहीं करना है।

स्व स्थिति को महान बनाने का साधन... ज्ञान और योग

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

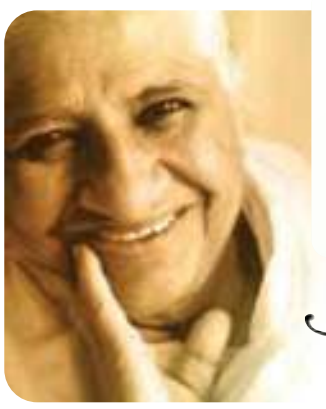

स्व स्थिति को महान बनाने का साधन है ज्ञान और योग। वह एक्यूरेट रखो तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ जायेंगे। सेवा की सब्जेक्ट भी कवर हो जायेगी क्योंकि मैंने ज्ञान से ही समझा ना कि हम सो देवता है, देवतापन का ज्ञान मिला तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ गये। ज्ञान से ही सेवा का उमंग बढ़ा।

एक बाप पर पूरा फेथ हो, आप उनसे फेथफुल अर्थात् ईमानदार रहो। जो ईमानदार है नैचुरल उनका रिगार्ड होगा। डिसरिगार्ड तभी होता जब फेथफुल नहीं। जो बाबा ने मुझे आज्ञाएं दी हैं उनको फुल पालन करना है। ऐसे नहीं दस में आठ पालन करूं, दो नहीं। बाबा की आज्ञाओं को सेन्ट परसेन्ट दिल में नोट करो फिर कोई भी सवाल नहीं रहेगा। सदा ओके बन जायेंगे। अगर मेरी स्थिति महान नहीं तो मैंने बाबा का बनकर क्या पाया!

स्व स्थिति को महान बनाने का साधन है ज्ञान और योग। वह एक्यूरेट रखो तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ जायेंगे। सेवा की सब्जेक्ट भी कवर हो जायेगी क्योंकि मैंने ज्ञान से ही समझा ना कि हम सो देवता है, देवतापन का ज्ञान मिला तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ गये। ज्ञान से ही सेवा का उमंग बढ़ा।

दुनिया में ऐसा कोई नहीं जो कहे तुम्हें आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करना है। परन्तु बाबा ब्रह्मचर्य में रहने की सख्त श्रीमत देता, इसमें ज़रा भी छूट नहीं। जिस बात के लिए दुनिया एक तरफ, उसी बाप को बाबा बिल्कुल स्ट्रॉन्ग करता। इस बात में रिंचक भी रहमदिल नहीं, इसमें काल होकर रहो। संस्कारों पर धर्मराज होकर रहो। जितना अपने संस्कारों पर धर्मराज बनेंगे उतना धर्म के ऊपर राज्य करेंगे। संस्कारों में ज़रा भी निर्बलता आयेगी तो हीन हो जायेंगे। लौकिक-अलौकिक कार्य में मस्त रहो। मस्तराम बन जाओ तो रावण आपेही पीठ कर लेगा। अगर सोचेंगे क्या करूँ, संस्कार हैं, तो वह कमज़ोर बना देंगे। सोचना भी कमज़ोरी है। आप डोन्टकेयर हो जाओ। आयेंगे चले जायेंगे, हमें बलवान से बलवान बाबा मिला। उसने हमें सब बल दे दिये इसलिए निर्बलता की बातें सोचो ही नहीं। आप समझो हम धर्मराज के समान हैं। हम माया को मार भगाने वाले हैं।

हमें एक ही डर है सतगुरु की श्रीमत के खिलाफ कोई मनमत न हो। जहाँ मनमत आई वहाँ अवज्ञा हुई, श्रीमत को पालन करने के लिए सतगुरु को सदा सामने रखो। श्रीमत मिली है बच्चे अमृतवेले उठना है, अन्न की परहेज रखनी है, संगदोष में नहीं आना है। रोज़ पढ़ाई पढ़नी है, यह सब सतगुरु ने श्रीमत दी। एक कहावत है जिनके सिर पर तू स्वामी, सो दुःख कैसा पावे। तो मुझे न कोई चिंता है, न दुःख।

दृष्टि, वृत्ति और व्यवहार

मनुष्य के व्यवहार का उसकी दृष्टि और वृत्ति से गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य की जैसी दृष्टि हो वैसी उसकी वृत्ति बनती है और जैसी वृत्ति हो उसी के अनुसार ही उसका व्यवहार होता है। 'महात्मा' वही होता है जिसकी दृष्टि और वृत्ति महान् हो। जिसकी दृष्टि अवगुणों या दुर्गुणों पर जाती है, उसकी प्रायः घृणा की वृत्ति हो जाती है। इससे स्वयं उसकी अपनी वृत्ति परिवर्तन होने से वो दुःखी एवं अशान्त रहता है। वह दूसरों की कटु आलोचना करता है और लोगों में उसकी भरपूर निन्दा करता है। उसके गुण उसे देखने में नहीं आते और यदि आये तो भी उसे वो अवगुण की पुट दे देता है। इस प्रकार, अनेकों के प्रति दृष्टि विकृत होने से उसका अपना व्यवहार और अपना जीवन विकृत हो जाता है। जैसे दृष्टि का प्रभाव वृत्ति पर पड़ता है, वैसे ही वृत्ति भी दृष्टि को प्रभावित करती है। अगर मनुष्य की वृत्ति सतोगुणी है तो उसकी दृष्टि भी तदानुसार सतोगुणी होती है और उसका व्यवहार भी क्षमाशील, गुणग्राही, निर्दोष और कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होता है।

वृत्तियों का निरोध करके जड़-जैसी अवस्था में चले जाना कोई श्रेष्ठ पुरुषार्थ नहीं

दृष्टि और वृत्ति के बारे में ऊपर हमने एक-दूसरे को प्रभावित करने वाली क्रिया और प्रतिक्रिया का जो संकेत किया है और उसके परिणामस्वरुप मनुष्य के व्यवहार, जीवन और कर्मों पर तथा मानसिक शान्ति एवं आन्तरिक सुख के साथ उसका जो सम्बन्ध स्पष्ट किया है, वो शाश्वत सत्य है। वह संसार के सभी व्यक्तियों पर सदा लागू होता है। इसलिए इसके बारे में सावधान रहने की आवश्यकता है। इस पर ध्यान न देने के परिणामस्वरुप दिनोंदिन मनुष्य का जीवन गिरावट की ओर जाता है। इस सत्यता पर धार्मिक ग्रंथों में इतना बल दिया गया है कि कुछ मनीषियों ने तो योग की व्याख्या करते हुए यह कह दिया है कि "योग चित्त की वृत्तियों के निरोध का नाम है"। यद्यपि सब वृत्तियों का निरोध करके जड़-जैसी अवस्था में चले जाना कोई श्रेष्ठ पुरुषार्थ नहीं है, न ही इसकी कोई आवश्यकता है। परन्तु लगता है कि ऐसी विचारधारा वाले सन्तों ने यह सोचा होगा कि हर एक वृत्ति में कुछ न कुछ दोष होता ही है। उन्होंने अपने जीवन में अनुभव किया होगा कि जाग्रत अथवा सुषुप्त अवस्था में ऐसा कोई काल होता ही नहीं जब मनुष्य की वृत्ति पूर्णतः निर्दोष हो, पवित्र हो एवं किसी न किसी विकार के सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभाव से रहित हो। प्रायः ही नहीं बल्कि लगभग सभी की मनोदशा बहुधा ऐसी रहती होगी। इसमें कुछ कम ज़्यादा सत्यता त ो है ।

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

परन्तु यदि मनुष्य देह-दृष्टि से ऊँचा उठ जाये और सबको आत्मा के रुप में देखे और सब आत्माओं को परमात्मा की सन्तान के रुप में स्वीकार करे और "हरेक अपने कर्मों का फल भोगेगा, हम काहे को चिन्तन करें" – इन बातों की सूझ-बूझ रखे तो फिर वो विदेह स्थिति में रहेगा। यद्यपि उसके पाँव पृथ्वी पर होंगे परन्तु उसका मन परमधाम में होगा। वो 'पुरुष' से 'विराट पुरुष' हो जायेगा। उसकी स्थिति 'सहजयोगी' जैसी होगी। उसका मन भ्रमित, विचलित, उत्तेजित या मूढ़ अवस्था में नहीं जायेगा। वे सदा 'आनन्दकन्द' मनोस्थिति का रसास्वादन करता रहेगा। उसके मन में सबके प्रति सदा सद्भावना बनी रहेगी। सबके साथ उसकी निरन्तर आत्मीयता होगी। भगवान उसका साथी होगा। जब वो स्वयं साक्षी होगा, दृष्टा होगा और उसका चित्त ज्ञान से छलकता होगा तो वह सदा हर्षित होगा।

बदलना आवश्यक है

कोई पुरुषार्थी सोच सकता है कि ये जो ऊँची-ऊँची बातें हैं, ये उनकी पहुँच से बाहर हैं और अभी तो वे उससे काफ़ी दूर हैं। कोई तो ये भी कहेंगे कि ये आदर्श हैं, ये व्यवहारिक नहीं हैं। वे यह जानना चाहेंगे कि वे ऐसी गगनचुम्बी अवस्था में अथवा स्थिति के शिखर पर कैसे पहुँचे, उनका मन जो बार-बार मैला हो जाता है, उस धूल-मिट्टी अथवा कचड़े-कीचड़ से कैसे बचे रहें? वे कहेंगे कि उनकी दृष्टि पर तो दूसरों के अवगुणों का चश्मा चढ़ा ही रहता है या उनके दुर्गुण उनकी आँख में धूल के कंकड़ की तरह चुभते ही रहते हैं। आखिर उनकी आँखें तो खुली रहनी हैं, तब उनकी दृष्टि कैसे निर्मल बनी रहे? उनकी वृत्ति अपने तथा दूसरों के दोषों से सदा विराम अवस्था में कैसे रहे? ये प्रश्न हरेक के लिए उपयोगी हैं। इनके पीछे दृष्टि और वृत्ति को बदलने की चेष्टा है। यह चेष्टा संकेत देती है कि उनकी पुरुषार्थ करने की नीयत तो है। ऐसे लोग उन लाखों-करोड़ों से अच्छे हैं जो अपनी दृष्टि-वृत्ति को बदलने की कामना ही नहीं करते। अपनी हालत खराब कर बैठने के बावजूद भी वे इस खराबी के स्वभाविक होने की बात करते हैं और तर्क-वितर्क से उसे युक्ति-संगत बताते हैं। ऐसे लोगों का बदलना तब तक असम्भव है जब तक उन्हें यह एहसास ही नहीं होता कि हमें स्वयं को बदलना चाहिए। आज बदलें या कल, बदलने के बिना कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है। मन की गहराई से यदि हम बदलना स्वीकार नहीं करेंगे तो परिस्थितियाँ हमें बदलने पर मजबूर कर देंगी। तब भी यदि हम न बदले तो फिर हम स्वयं को मनुष्य की कोटि में न समझें।

कुत्ता एक ऐसा पशु है जिसकी पूँछ सदा टेढ़ी बनी रहती है। कहते हैं कि एक मनुष्य ने वर्षभर कुत्ते की पूँछ को लोहे की नली में सीधा कसकर रखा। उसने सोचा, एक वर्ष काफ़ी होता है, अब तो यह पूँछ सीधी हो गयी होगी। इस दौरान कुत्ता चिल्लाता भी था तो भी उसने उसकी पूँछ पर से नली नहीं हटायी। पर वर्षभर बाद जब हटायी, तब वो यह देखकर आश्चर्य चकित हुआ कि कुत्ते की पूँछ तो वैसी की वैसी टेढ़ी है! ऐसे ही कुछ लोग बदलना ही नहीं चाहते। उनके बारे में तो कहेंगे कि 'अल्लाह ही ख़ैर करे!' 'खुदा हाफिज, उन्हें ख़ौफ़े ख़ुदा ही नहीं है।' जो धर्मराज से ही नहीं डरते, वे धर्मात्मा लोगों से कहाँ डरेंगे...!!!

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस के कार्यक्रम में शामिल होने पर भारतीय नौसेना के उप प्रमुख वाइस एडमिरल एस.एन. घोरमडे,परम विशिष्ट सेवा मेडल,अति विशिष्ट सेवा मेडल,नौ सेना मेडल ने संस्थान की वर्तमान मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को भारतीय नौसेना का मोमेंटो देकर सम्मानित किया। इसके पश्चात् दादी ने उन्हें ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट किया। इस मौके पर कर्नल ब्र.कु. सती तथा ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके उपस्थित रहे।

मुम्बई-घाटकोपर। युनाइटेड नेशन्स द्वारा आयोजित 'इंटर फेथ वीक' एवं 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के घाटकोपर सब ज़ोन द्वारा आयोजित 'वन गॉड-वन वर्ल्ड फैमिली' विषयक ऑनलाइन कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,एडिशनल डायरेक्टर, ब्रह्माकुमारीज़,सेंट्रल मुम्बई, फादर डॉ. डेविड बरा,स्पीरिचुअल प्रीचर, भदंत डॉ. राहुल बोधी,महाथेरो,भिकु संघ,युनाइटेड बुद्धिस्ट मिशन तथा नसुमुद्दीन कासिम, इमाम,मदीना मस्जिद दिल्ली ने सम्बोधित किया। इस दौरान 'वन गॉड-वन वर्ल्ड फैमिली' विषय पर आर्टिकल राइटिंग कॉम्पिटीशन एवं मेडिटेशन सेशन का भी आयोजन किया गया।

राजनांदगांव-छ.ग.। महाशिवरात्रि के अवसर पर 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' परियोजना के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा निर्माणाधीन ज्ञान मान सरोवर में 'शिव दर्शन आध्यात्मिक महोत्सव' में सांसद संतोष पाण्डे, महापौर श्रीमति हेमा देशमुख, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. प्रभा बहन, ब्र.कु. मुरलीधर सोमानी, जिला भाजपा अध्यक्ष मधुसूदन यादव, पूर्व सांसद प्रदीप गांधी, पूर्व महापौर नरेश डाकलिया, छ.ग. राज्य वेयर हाउस कॉर्पोरेशन के पूर्व अध्यक्ष नीलू शर्मा, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष भरत वर्मा, नेता प्रतिपक्ष किशुन यदू, पार्षद शिव वर्मा, गगन आईच एवं कमलेश बंदे, समाजसेवी नरेन्द्र लोहिया, एल्डरमेन प्रतिमा बंजारे, मामराज अग्रवाल, राजेन्द्र जैन सहित बड़ी संख्या में शहर के लोग उपस्थित रहे।

पुणे-पिंपरी(महा.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव एवं महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'शिवदर्शन ज्ञान मेला' में 14 फुट महा शिवलिंग, बारह ज्योतिर्लिंग दर्शन, चैतन्य शंकर-पार्वती दर्शन, विशाल शंकर जी की मूर्ति, रक्तदान शिविर, मुफ्त आरोग्य चिकित्सा शिविर, बुक स्टॉल आदि का आयोजन हुआ। इस मेले का सभी कॉर्पोरेट सेक्टर के लोगों, पुलिस निरीक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, बिज़नेसमैन तथा अन्य गणमान्य लोगों सहित बड़ी संख्या में शहर के लोगों ने लाभ उठाया। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुरेखा दीदी सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

खेडब्रह्मा-गुजरात। महाशिवरात्रि के अवसर पर स्थानीय सेवाकेन्द्र पर बर्फ के अमरनाथ की झाँकी तथा राजयोग शिविर के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित हैं नगरपालिका प्रमुख सागर भाई, व्यापारी ओमप्रकाश भाई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन तथा अन्य।

मुम्बई-डोम्बिवली। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में दीप प्रज्वलन के अवसर पर उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, सनी पुरोहित,डेंटिस्ट, बहरुख गावत,प्रिन्सीपल,गावदेवी विद्या मंदिर, मधुकर भोईर,ट्रस्टी,गांवदेवी विद्या मंदिर, रविन्द्र वसईकर,वाइस प्रिन्सीपल,गांवदेवी विद्या मंदिर, शिरीष देशपांडे,रोट्री क्लब अध्यक्ष,ग्रीन इंग्लिश स्कूल के अध्यक्ष, प्रेरणा कोल्हे, राजकुमार कोल्हे,प्रिन्सीपल,जन गण मन स्कूल एंड कॉलेज, केशव भोईर,ट्रस्टी,गांवदेवी स्कूल, नितिन गायकवाड़,प्रेस रिपोर्टर तथा अन्य।

बाल्को-कोरबा(छ.ग.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में राजकिशोर प्रसाद, महापौर,नगर पालिका कोरबा, कैलाश पवार, प्राचार्य, डी.पी.एस. बाल्को, गंगाराम भारद्वाज,पार्षद,वार्ड क्र.37, नर्मदा प्रसाद लहरे,पार्षद,वार्ड क्र.36, एस.मूर्ति एल्डरमेन, हितानन्द अग्रवाल,पार्षद, ब्र.कु. बिन्दु बहन, ब्र.कु. रुक्मिणी बहन, संतोष राठौर, पार्षद, कृपाराम साहू,पार्षद, दुश्यन्त शर्मा,अध्यक्ष, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी बाल्को तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

उमरेड-महा.। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित शोभायात्रा में प्रदीप वरपे,नायब तहसीलदार, राजेश भेंडे,नगरसेवक, सुमन ताई इटनकर,पूर्व नगराध्यक्ष तथा ज़ी किड्स उमरेड प्रभारी, ब्र.कु. रेखा दीदी,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, संध्या ताई पारवे,समाजसेविका तथा पूर्व विधायक की धर्मपत्नी, ब्र.कु. अशोक भाई तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

सुरेन्द्रनगर-गुज.। 86वीं त्रिमूर्ति शिवजयंति के पावन पर्व पर एक ही स्थान पर घूमते हुए 12 ज्योतिर्लिंगम, शिव शंकर की चैतन्य झाँकी, आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी एवं 3डी विडियो अनुभूति कक्ष का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नगरपालिका प्रमुख विरेन्द्र आचार्य, ब्र.कु. हर्षा बहन तथा ब्र.कु. अरुणा बहन।

प्युरिटी का फाउंडेशन हो मजबूत

गतांक से आगे...

जैसा कि पिछले दो अंकों में हम प्युरिटी के बारे में ही बात कर रहे हैं। तो अब हम और आगे बढ़ते हैं कि बाबा ने हमें जो कहा कि प्युरिटी माना सिर्फ बह्मचर्य नहीं, सिर्फ उसको ही प्यूरिटी नहीं कहा जाता। लेकिन प्युरिटी माना ब्रह्माचारी बनना। ब्रह्मा बाबा ने जो आचरण करके सिखाया, उस बात को आचरण में लाना ये है ब्रह्माचारी, ये है प्युरिटी। तो बाबा कई बार मुरली में अपना अनुभव सुनाते हैं कि भक्ति मार्ग में बाबा में कितनी रॉयल्टी थी, कितनी सच्चाई थी कि कई बार राजाओं, महाराजाओं के पास भी जाते थे तो उनकी सत्यता की सभ्यता को देखते हुए वो राजायें भी कह देते बाबा को कि भगवान से गलती हो गई राजा तो आपको बनाना चाहिए था, हमको बना दिया। कितनी बड़ी बात है। कोई स्टेट का राजा ये बात बोले बाबा को तो ये सोचने की बात है। उनके अन्दर इतनी सत्यता थी कि कभी कोई बात को लेकर झूठ नहीं अपनाया। जो बात जैसे है वैसे ही बता देते थे। जो भी उनके पास आता व्यापार के रिलेटेड तो बता देते थे कि मैं गीता का पाठ किए बिना कोई कार्य आरम्भ नहीं करता। बाबा गीता का पाठ करके ही सब कार्य करते थे। चाहे वो बैठा रहे। वो कहते थे कि हम तो आपको इतना दान देने के लिए तैयार हैं आप अपना पूजा-पाठ छोड़ दो, गीता का पाठ छोड़ दो और बिजनेस पर आ जाओ। तो बाबा कहते थे कि आप तो हमें कागज़ देते हैं और हम तो आपको हीरे देते हैं, दाम आप हमें दे रहे हैं या हम आपको दे रहे हैं। और उसके लिए मैं अपनी जीवन की नियम-मर्यादायें नहीं छोड़ूंगा।

तो इसीलिए कहा कि प्युरिटी एक तो विचारों की क्योंकि विचार ही चेहरा बनाता है। तो विचार किस प्रकार है वो चेहरा बताता है। तो चेहरा कैसा होना चाहिए? सदा खुशी

ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

वाला, सदा खुशकिस्मत दिखाई दे कि ये खुशकिस्मत है। ऐसा खुशी वाला चेहरा सदा हो, जिस चेहरे के अन्दर ऐसी रूहानियत समाई हो। क्योंकि चेहरे में ही तो सारी बातें आ जाती हैं, दृष्टि भी आ जाती है, वृत्ति भी आ जाती है। तो उसके लिए बाबा ने कहा कि दृष्टि के अन्दर रूहानियत हो, रूहों को देखो, उस सत्य स्वरूप को देखो, हर आत्मा का सत्य स्वरूप दिखाई दे। ऐसी हमारी दृष्टि हो कि ये हमारा आत्मा भाई-भाई है। ऐसी वृत्ति हमारी बन जाये और इस तरह जब आपस में एक-दूसरे के साथ बात करते हैं तो उसमें भी रूहानियत छलके, अर्थात् बातचीत के अन्दर रूहानियत का भाव, मधुरता, गंभीरता, ये भी प्युरिटी का ही हिस्सा है। दादी जानकी हमेशा ये बात कहती थीं कि प्युरिटी का प्रमाण मधुरता, धैर्यता, गंभीरता और सरलता है। इन चार बातों से वाणी का पता चलता है। अगर वाणी के अन्दर सरलता न हो, सहजता न हो, मधुरता न हो, धैर्यता न हो, गंभीरता न हो तो जो मम्मा के प्रैक्टिकल जीवन से, सभी दादियों के जीवन से सुना मम्मा के एक-एक जो वचन निकलते थे वो कितने ज्ञानयुक्त निकलते थे। वो वाणी मम्मा की कैसी होती थी धैर्यता और गंभीरता वाली। इसीलिए उनके एक-एक बोल में वजन होता था जिसको कहा जाये तोलो और बोलो। तो मम्मा का एक-एक वचन सुनने के लिए हर कोई कैसे तत्पर रहता था।

बाबा ने हमें कितना सरल बता दिया कि बच्चे तुम्हारी वाणी के अन्दर मधुरता, नम्रता छलकती होगी तो लोग आतुरता से सुनेंगे आपके शब्दों को। व्यर्थ जितना बोलते हैं, आज किसी की ग्लानि कर रहे हैं, निंदा कर रहे हैं तो क्या कहेंगे कि फालतू बातें कर रहे हैं, टाइम वेस्ट किया हमारा। दूसरी बार क्या करेंगे उस व्यक्ति से किनारा कर लेंगे। इसीलिए बाबा ने हमें इतनी सुन्दर विधि बताई कि हमारी दृष्टि, वाणी और वृत्ति ये तीन चीज़ कैसी होनी चाहिए। वो प्युरिटी की पर्सनैलिटी है हमारी।

- क्रमशः

बैकुंठपुर-छ.ग.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में संसदीय क्षेत्र कोरबा की लोकसभा सांसद ज्योत्सना महंत, सुरेन्द्र दुबे,कार्यपालन अभियंता,जल संसाधन, अशोक जायसवाल,पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष, जीतेन्द्र गुप्ता,सहायक विकास खंड शिक्षा अधिकारी, ब्र.कु. रेखा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

छोटा उदेपुर-गुज.। आशा प्रतिष्ठा चैरिटेबल ट्रस्ट,दिल्ली द्वारा किंग्स कोर्ट बैंकेट,पश्चिम विहार दिल्ली में आयोजित 'वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप सम्मान समारोह' में राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. मोनिका बहन को आदिवासी क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड 2022' से सम्मानित किया गया। इस मौके पर आशा प्रतिष्ठा चैरिटेबल ट्रस्ट की फाउंडर और नेशनल प्रेसीडेंट श्रीमति अजीता सिंह, बीजेपी की प्रदेश अध्यक्षा श्रीमति योगिता सिंह, बीजेपी के वरिष्ठ नेता विक्रम डोगरा तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

उमरेड-महा.। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में 'सर्व धर्म समभाव' नाटिका के प्रतिभागियों के साथ मंच पर विधायक राजू पारवे, पूर्व विधायक सुधीर पारवे, नगरसेवक राजेश भेंडे, क्रिश्चियन धर्म के प्रतिनिधि फादर वर्सीस,डब्ल्यूसीएल चर्च, सिख धर्म के प्रतिनिधि प्रीतम सिंह सैनी,डब्ल्यूसीएल उमरेड, राजयोगिनी ब्र.कु. रेखा दीदी, ब्र.कु. अशोक भाई तथा अन्य।

अहमदाबाद-इंडिया कॉलोनी। ज्ञानचर्चा के पश्चात् सेवाकेन्द्र पर अब्दुल्ला मोहम्मद,दुबई और अफरिकन बिज़नेस मैन व सन ऑफ दुबई पुलिस ऑफिसर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भानु बहन तथा ब्र.कु. बाबू भाई।

अम्बिकापुर-छ.ग.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित 'सर्व धर्म समागम' में अम्बिकापुर जेल अधीक्षक बौद्ध समाज से राजेन्द्र गायकवाड़, प्राचार्य विवेकानंद स्कूल स्वामी तन्मयानंद जी, प्राचार्य बी.एड. कॉलेज सेंट जेवियर फादर सुशील तिग्गा, मुस्लिम समाज के प्रतिनिधि रशीद अंसारी, अध्यक्ष श्री गुरूद्वारा सिख सभा अम्बिकापुर श्री गुरूचरण सिंह छाबड़ा, पुलिस अधीक्षक अम्बिकापुर अमित तुकाराम काम्बले, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अम्बिकापुर विवेक शुक्ला, अध्यक्ष प्रेस क्लब अम्बिकापुर त्रिलोक कपूर कुशवाहा, ब्रह्माकुमारीज़ सरगुजा संभाग की संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी, ब्र.कु. ममता बहन, सताक्षी वर्मा, आचार्य दिग्विजय सिंह तोमर, आर.के. जैन एवं शहर के अन्य गणमान्य लोगों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

बागलकोट-कर्नाटक। 'अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा वीरभद्रेश्वर मंदिर हॉल बागलकोट में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. अम्बिका बहन,क्षेत्रीय निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़,बेलगाव, ब्र.कु. भगवान भाई,मा.आबू, काशीनाथ महास्वामी, गुलदगुन्ड, जी.एन. पाटिल,पूर्व अध्यक्ष, एस.आर. मनहली,ज्वाइंट डायरेक्टर, शिक्षा विभाग, नागरत्ना हेब्बल्ली,नगरपालिका मेम्बर, एम.सी. घत्ताड, अध्यक्ष, वीरभद्रेश्वर ट्रस्ट कमेटी, राजशेखर अडकेनवर,रिटा. मैनेजर,के.वी.जी. बैंक, ब्र.कु. नागरत्ना बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. सरोज बहन, संचालिका,ज्ञान गंगा कॉलोनी,विजयपुर, ब्र.कु. विश्वनाथ भाई,बेलगाव तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

सेंधवा-म.प्र.। आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के अंतर्गत 'न्याय व्यवस्था में आध्यात्मिकता एवं ईश्वरीय विधान' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के पूर्व जस्टिस बी.डी. राठी, महिला मोर्चा अध्यक्ष लक्ष्मी शर्मा, पूर्व अग्रवाल महिला मंडल अध्यक्ष किरण तायल, लायंस क्लब अध्यक्ष सुनील छाबड़ा, रोट्री क्लब अध्यक्ष नीलेश अग्रवाल, सराफा एसोसिएशन अध्यक्ष मंजूल शर्मा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. छाया बहन तथा अन्य।

बसना-छ.ग.। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित भव्य 'द्वादश ज्योतिर्लिंग झाँकी' के उद्घाटन पश्चात् उपस्थित हैं पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष सम्पत अग्रवाल तथा अन्य गणमान्य अतिथियों के साथ ब्र.कु. भुवनेश्वरी बहन व ब्र.कु. पूनम बहन।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NO: - 30826907041
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya,Shantivan
Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail -omshantimedia.acct@bkivv.org **OR**
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087

कितने न भाग्यशाली हम... जो परमात्म श्रेष्ठ मत हमें मिल रही...!

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी गीता दीदी,माउण्ट आबू

संगमयुग में स्वयं शिवबाबा(परमात्मा) सृष्टि पर आते हैं और आकर जो मत देते हैं उसे ही श्रीमत कहा जाता है। ब्रह्मा तन में प्रवेश कर ब्रह्मा मुख से बाबा(परमात्मा)श्रीमत देते हैं और वो श्रीमत मुरली के रूप में हमारे सामने है। बाबा ने जो श्रेष्ठ मत, सत्य मत हम बच्चों को दी है उसी का यादगार भक्ति में श्रीमद्भगवत गीता शास्त्र बनता है। इस शास्त्र रचना में समय प्रति समय मनुष्य मत मिश्रण होती गई इसलिए आज संसार के सामने भगवान की श्रेष्ठ मत, भगवान का सत्य गीता ज्ञान दुनिया वालों के सामने नहीं है लेकिन सत्य या ओरिजनल गीता शास्त्र भी नहीं है। हम भाई-बहनें भाग्यशाली हैं कि साक्षात भगवान जो श्रेष्ठ मत देते हैं वो बिल्कुल स्पष्ट रूप में हमें प्राप्त हो रही है। ये तो आप जानते हैं कि हरेक इंसान अपना जीवन कोई न कोई मत के आधार पर चलाता है। वो मत उनकी अपने मन की भी हो सकती है, अन्य से मिली हुई भी हो सकती है जिसको बाबा कहते हैं कि इंसान मनमत पर जीता है या परमत दूसरों के कहने अनुसार जीता है। जो लोग भक्ति करते हैं भारतवासी ही नहीं बल्कि हर कोई धर्म भक्ति करते हैं तो वो भी हरेक शास्त्र मत पर या अपने-अपने गुरु की मत पर चलते हैं। 63 जन्मों का अनुभव क्योंकि द्वापर युग से मनमत भी शुरु भी होती है, परमत, मनुष्य मत भी शुरु भी होती है और गुरुमत, शास्त्रमत भी शुरु होती है।

अनेक मत होने के कारण जीवन का कोई स्वरूप नहीं रहा। मनुष्य मूंझते हैं आखिर किसकी मत पर चले, किसका कहना मानें इसलिए हम जो मानते हैं वो ही ठीक है करके, उसी मनमत या गुरु मत, या शास्त्र मत पर चलते रहते हैं। लेकिन अब जबकि बाबा ने आकर भक्ति का फल सत्य ज्ञान हम बच्चों को दिया है, हमें स्पष्ट है कि मनमत हो या परमत हो, मनुष्य मत हो, शास्त्र मत हो या गुरु मत हो वो सम्पूर्ण सत्य नहीं है। क्योंकि कलियुग के अंत के समय हरेक आत्मा सतयुग से लेकर कलियुग तक जो भी इस ड्रामा में पार्ट बजाने आये हैं चाहे वो आत्मा है, देवात्मा है, धर्मात्मा है, महात्मा है वो सर्वमनुष्यात्मायें ही हैं। हर कोई कलियुग के अंत समय पतित तमोप्रधान स्थिति को प्राप्त हो जाते हैं इसलिए उस पतित आत्म स्थिति से जो भी मत होगी वो सत्य नहीं हो सकती, श्रेष्ठ नहीं हो

> बाबा ने आकर भक्ति का फल सत्य ज्ञान हम बच्चों को दिया है, हमें स्पष्ट है कि मनमत हो या परमत हो, मनुष्य मत हो, शास्त्र मत हो या गुरु मत हो वो सम्पूर्ण सत्य नहीं है। क्योंकि कलियुग के अंत के समय हरेक आत्मा सतयुग से लेकर कलियुग तक जो भी इस ड्रामा में पार्ट बजाने आये हैं चाहे वो आत्मा है, देवात्मा है, धर्मात्मा है, महात्मा है वो सर्वमनुष्यात्मायें ही हैं।

सकती। तो ये हम सबकी बुद्धि में स्पष्ट रहे कि जन्म-मरण के चक्र में आने वाली, कलियुग अंत में पहुंची हुई किसी भी आत्मा की मत सत्य नहीं हो सकती, श्रेष्ठ नहीं हो सकती। इसलिए वो कल्याणकारी नहीं हो सकती।

इसलिए बाबा(परमात्मा) हम बच्चों को समझाते हैं कि मनुष्य, मनुष्य की सद्गति नहीं कर सकता। क्योंकि सद्मत से सद्गति होती है। और सद्मति, सत्यमति और सत्यबुद्धि किसी की भी आज नहीं है। नम्बरवार हरेक आत्मा की मत तमोप्रधान बन गई है। क्योंकि पवित्रता भी हमारी सम्पूर्ण नहीं है क्योंकि हम ब्राह्मण भाई-बहन भी पुरुषार्थी स्थिति में हैं। इसलिए बाबा जो ब्रह्मा मुख से मत देते, विचार देते वो ही सत्य है, कल्याणकारी है। इंसान अपनी मत किस आधार पर देता है,उसमें काफी बातें असर करती हैं। एक है उनकी जो मान्यतायें हैं, विश्वास है, वो मान्यतायें उनकी अपनी हैं, दूसरों के अनुभवों से मिली हुई हैं, समाज से, शिक्षा से, परिवार से मात-पिता से, धर्म से, संस्कृति से इन सबके द्वारा हमें विभिन्न प्रकार की मान्यतायें मिलती हैं। और इंसान जो मान्यता स्वीकार करता है उसी के आधार पर उसकी मत बनती है, ओपिनियन(राय) बनती है।

अब आत्मा अपने अन्दर संस्कारों के साथ जो मान्यता लेकर आती है चाहे माँ-बाप से, परिवार से, शिक्षा से, समाज से, संग से, पढ़ाई से, धर्म से, कल्चर से, जो भी मान्यतायें मिलती हैं वो पूर्ण सत्य नहीं हैं। और विज्ञान की भी जो मतें हैं वो भी फाइनल टूथ नहीं हैं क्योंकि विज्ञान भी मानव मन की ही रचना है। और वो भी हरेक अपनी-अपनी रिसर्च के अनुसार मत देते हैं। इसलिए वो बदलती रहती है। जो लोग ईश्वर में आस्था रखते हैं वो लोग धर्म से मान्यतायें ज़्यादा लेते हैं। और जो भौतिकवादी लोग हैं वो विज्ञान से ज़्यादा मत लेते हैं लेकिन हमें स्पष्ट रखना चाहिए बुद्धि में कि धर्म भी पूर्ण सत्य नहीं हो सकता और विज्ञान भी पूर्ण सत्य नहीं हो सकता। और यही कारण है कि धर्म भी अनेक हैं, और शास्त्र भी अनेक हैं और वैज्ञानिकों के द्वारा भी समय प्रति समय रिसर्च के नये-नये रिज़ल्ट समाज के सामने रखे जाते हैं। इसलिए दोनों में मूंझ है। बाबा की मुरली में इतना सुन्दर महावाक्य आता है इसलिए सूत मूंझा हुआ है माना उलझा हुआ है।

- क्रमशः

कामठी-महा.। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित 'स्वर्णिम भारत की पहचान आत्मनिर्भर किसान' विषयक कार्यक्रम में जिला परिषद् अध्यक्षा रश्मिताई बर्वे, विधायक टेकचंद सावरकर, ब्र.कु. प्रेमलता दीदी, पूर्व विधायक देवराव रडके, रनाला गांव की सरपंच सुवर्णा साबळे, येरखेड़ा सरपंच मंगलाताई कारेमोरे, पूर्व सरपंच देवराव आमधरे आदि गणमान्य नागरिकों सहित बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

इंदौर-क्षिप्रा(म.प्र.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् प्रतिज्ञा करते हुए प्रिंसीपल हेमंत जोशी, दिनेश मगरूले, ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता दीदी, ब्र.कु. उषा बहन, ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. सविता बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

चंदला-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत मीडिया कर्मियों के लिए 'स्वर्णिम भारत के निर्माण में मीडिया की भूमिका' विषयक कार्यक्रम में छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन, चंदला गौरीहार सरवई से मीडिया कर्मी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

अमलापुरम-आ.प्र.। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. श्रीदेवी बहन, ब्र.कु. स्वरूपा बहन, आर.सत्या नागेन्द्र मणि,म्युनिसिपल चेयरपर्सन, गंगा भवानी,सब इंस्पेक्टर ऑफ पुलिस, राधम्मा,सोशल एक्टिविस्ट, उषा रानी,बी.एड. कॉलेज कॉरस्पॉन्डेंट, शकुंतला देवी,डॉक्टर, सी.एच. राजेश्वरी,बीजेपी महिला किसान मोर्चा तथा बड़ी संख्या में अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

बाजीपुरा-गुज.। आज़ादी के अमृत महोत्सव एवं महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. अरुणा बहन,बारडोली, ब्र.कु. प्रीति बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, समीर भाई भक्त,मंडी शुगर चेयरमैन, एन.जे. पंचाल, पी.एस.आई, वालोड, आशीष भाई, धनजी भाई, पिंटू भाई तथा बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

राजकोट-अवधपुरी(गुज.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा आयोजित 'सशक्त युवा-समृद्ध भारत' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए परिवहन राज्यमंत्री अरविंदभाई रैयाणी, पुरुषार्थ युवक मंडल के प्रमुख किशोरभाई राठौड़, राजकोट जगदम्बा भवन अवधपुरी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. विधि बहन तथा अन्य।

भोपाल-रोहित नगर(म.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित महाशिवरात्रि महोत्सव में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रीना दीदी, राजेश गुरु जी,डीएसपी,मानवाधिकार आयोग भोपाल, डॉ. राजेश पसरीचा,विभागाध्यक्ष,रेडिएशन ऑन्कोलॉजी विभाग,एम्स, श्रीमति ऋतु पल्लवी, प्राध्यापक, केन्द्रीय विद्यालय क्रं 3, ब्र.कु. सुरेश भाई, ब्र.कु. सुरेन्द्र भाई, ब्र.कु. रावेन्द्र भाई तथा बड़ी संख्या में शहर के लोग व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

रतलाम-पत्रकार कॉलोनी(म.प्र.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष राजेन्द्र लुनेरा, वन मंडल अधिकारी ध्यानचंद डोडवे, कांग्रेस जिला अध्यक्ष महेंद्र कटारिया, गोपाल मंदिर अध्यक्ष मनोहर पोरवाल, जनशक्ति संयोजक राधा वल्लभ खंडेलवाल, माहेश्वरी समाज के पूर्व अध्यक्ष माधव काकानी, स्वदेश संपादक शरद जोशी, चौथा रास्ता संपादक मिश्री लाल सोलंकी, खुशहाल पुरोहित, ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. गीता बहन तथा अन्य।

इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'श्रेष्ठ विश्व के निर्माण में सर्व धर्म की भूमिका' विषयक सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए महासुंदरी देवी,दास,इस्कॉन, फादर पायस लेकरा, क्रिश्चियन धर्म, राजयोगिनी ब्र.कु. आरती दीदी, ब्र.कु. नारायण भाई, प्रो. जुजर हुसैन,मुस्लिम धर्म, शैलेंद्र शास्त्री,हिन्दु धर्म, ब्र.कु. पूनम बहन, जसवीर सिंह, सिख धर्म तथा डॉ. राजेश मुनि महाराज,जैन धर्म।

पन्ना-म.प्र.। अंकुर अभियान के अंतर्गत जिला जेल में पौधारोपण करते हुए ब्र.कु. सीता बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़, राजेंद्र प्रसाद मिश्र,उप जेल अधीक्षक पन्ना तथा अन्य।

थाने-शिवाजी नगर(महा.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा एसएमएस ग्रुप(एस्मेक इक्वीपमेंट प्रा.लि.) में आयोजित 'माई लाइफ्स बैलेंस शीट' विषयक कार्यक्रम को ब्र.कु. सरला बहन तथा ब्र.कु. पूनम बहन ने सम्बोधित किया। इस मौके पर कंपनी के एच.आर. शामकान्त भावसार तथा स्टाफ उपस्थित रहे।

भीगी मूंगफली के फायदे...

स्वास्थ्य

मूंगफली का सेवन हम सर्दियों में किसी न किसी व्यंजन के ज़रिए ज़रूर करते हैं जबकि इसका सामान्य रूप से व अन्य किसी भी मौसम में किया गया सेवन भी कई फायदे पहुंचाता है।

ड्राई फ्रूट के मामले में मूंगफली एक ऐसा स्थान रखती है जो बड़ी आसानी से आपको कम से कम दाम में मिल जाती है। अन्य ड्राई फ्रूट के मुकाबले इसका प्रयोग विभिन्न प्रकार के पकवानों को बनाने में किया जाता है। जबकि मूंगफली का सेवन अगर रात में भिगोने के बाद सुबह उठकर किया जाए तो उसके कई बेहतरीन स्वास्थ्य फायदे देखने को मिल सकते हैं। आज हम आपको उन फायदों के बारे में बताएंगे जो मूंगफली को भिगोकर खाने के बाद मिलते हैं।

हृदय रोगों से दिलाए सुरक्षा...

मूंगफली में ऐसे गुण पाए जाते हैं जो दिल की जुड़ी कई प्रकार की बीमारियों से भी सुरक्षा प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों की मानें तो मूंगफली में कार्डियोप्रोटेक्टिव गुण पाया जाता है। इस कारण जो लोग नियमित रूप से कार्डियोप्रोटेक्टिव वाले स्रोत खाद्य पदार्थ का सेवन करते हैं वह अपनी डाइट में मूंगफली को भी शामिल कर सकते हैं। कार्डियोप्रोटेक्टिव एक ऐसा गुण है जो दिल से जुड़ी बीमारियों के खतरे को कई गुणा तक कम कर देता है। इससे शरीर को गर्माहट मिलती है। इससे आपका ब्लड सर्कुलेशन बेहतर बनता है। आपका दिल स्वस्थ तरीके से अपने कार्य को सम्पन्न करता है।

डायबिटीज़ से छुटकारा...

मूंगफली को भिगोकर खाने से ब्लड शुगर कंट्रोल में रहता है। जिससे डायबिटीज जैसी बीमारी से बचाव रहता है। शुगर के मरीज मूंगफली के दानों को रातभर पानी में भिगोकर रख दें और अगले दिन सुबह इसका सेवन करें।

ब्रेन फंक्शन को सक्रिय करे...

कई प्रकार के ड्राई फ्रूट का सेवन करना दिमाग के स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद माना जाता है। वहीं, मूंगफली में ओमेगा-3 फैटी एसिड पाया जाता है। यह एक ऐसा फैटी एसिड है जो दिमाग की कार्यक्षमता को बढ़ाने का कार्य करता है। इसलिए जो बच्चे आपके घर में पढ़ाई कर रहे हैं उन्हें रोज़ सुबह भीगी हुई मूंगफली का नियमित रूप से सेवन कराया जा सकता है। यह उनकी याद करने की क्षमता पर भी सकारात्मक असर डाल सकता है।

आँखों की रोशनी बढ़ाए...

मूंगफली में मौजूद विटामिन आँखों की रोशनी के साथ-साथ याद्दाश्त भी तेज करता है। इसलिए बच्चों को रोजाना सुबह भीगी हुई मूंगफली ज़रूर खिलाएं।

खून की कमी को करे पूरा...

आयरन से भरपूर होने के कारण मूंगफली का सेवन एनीमिया की प्रॉब्लम से बचाव करता है। आप भीगी हुई मूंगफली को दूसरे सप्राउट्स के साथ मिक्स करके खा सकते हैं। इसके अलावा खून बढ़ाने के लिए गुड़ और मूंगफली खाना भी फायदेमंद होता है।

वजन को करे कम...

फाइबर से भरपूर मूंगफली का सेवन शरीर को एनर्जी देने के साथ-साथ मेटाबॉलिज्म बूस्ट भी करता है। मूंगफली खाने से वजन घटाने में काफी मदद मिलती है।

स्किन को बनाए चमकदार...

हर कोई अपनी स्किन को चमकदार और मेंटेन बनाए रखने के लिए तरह-तरह के ब्यूटी प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करता है। वहीं, भीगी हुई मूंगफली का सेवन करने वाले लोगों को भी त्वचा संबंधित कई प्रकार के फायदे मिल सकते हैं। दरअसल, मूंगफली में एंटीऑक्सीडेंट की मात्रा पाई जाती है। इस कारण यदि आप सुबह-सुबह इसका सेवन करते हैं तो वह दिन भर आपकी त्वचा में ताज़गी बरकरार रखने का काम कर सकता है।

पाचन शक्ति को करे मजबूत...

फाइबर एक ऐसा पोषक तत्व है जो पाचन क्रिया को सुचारू रूप से चलाए रखने के लिए अति आवश्यक है। इसलिए फाइबर स्रोत वाले खाद्य पदार्थों को नियमित रूप से भोजन में शामिल किया जाना चाहिए। इसके लिए आप मूंगफली को भी अपनी प्लेट में जगह दे सकते हैं। इससे आप पेट से जुड़ी कई प्रकार की समस्याओं जैसे कब्ज और पेट में दर्द से भी बचे रहेंगे। सुबह खाली पेट गुड़ के साथ भीगी हुई मूंगफली खाने से गैस और एसिडिटी की समस्या दूर होती है।

वर्धा-महा.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित उद्घाटन कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष सरिता ताई गाखरे, मा.आबू से ब्र.कु. देव भाई, ब्र.कु. चंद्रशेखर भाई, ब्र.कु. अश्विन भाई, ब्र.कु. दत्तू भाई, वरिष्ठ समाज सेवक मोहन भाई अग्रवाल, समाज कल्याण उपायुक्त शरद भाई चौव्हान, देवळी नगर परिषद अध्यक्ष सुचिता ताई मडावी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी दीदी तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

नवसारी-लुनसिकुई(गुज.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान तथा ब्रह्माकुमारीज़ के राज्य स्तरीय दिव्यता सम्पन्न वर्ष के प्रोजेक्ट के अंतर्गत प्रवृत्ति में रहते राजयोगी जीवन जीने वाले युगलों की उन्नति के लिए आयोजित योग तपस्या भट्ठी कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. गीता बहन,मुख्य संचालिका, ब्र.कु. भानु बहन तथा युगल।

बीदर-कर्नाटक। आज़ादी के अमृत महोत्सव एवं महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं सीएमसी काउंसलर धनराज हंगरगी, ब्र.कु. पार्वती बहन, सिद्धारुड मठ बेलूर के मठाधीश मातोश्री अमृतानंदमई, राजयोगिनी ब्र.कु. सुनंदा दीदी, उत्तर कर्नाटका कन्नड़ न्यूज़ पेपर के संपादक शिव शरणप्पा वाली, कन्नड़ साहित्यिक डॉ. एम.जी. देशपांडे तथा शल्य चिकित्सक डॉ. वैजनाथ तुगावे।

दीसा-गुज.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित चैतन्य झाँकी में उपस्थित हैं ब्र.कु. सुरेखा बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

संगारेड्डी-आ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बायें से ब्र.कु. सपना बहन, रजिनी पुरम,आर्य वैश्य महिला संघम प्रेसीडेंट, लता विजेन्दर रेड्डी,म्युनिसिपल वाइस चेयरपर्सन, ब्र.कु. विजय लक्ष्मी बहन, लावण्या बहन,वार्ड काउंसलर, डॉ. रेशमा अंजुम,गायनेकोलॉजिस्ट,डायरेक्टर,दुआ हॉस्पिटल तथा बीके उमा माहेश्वरी।

राजकोट-गुज.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत यूथ विंग द्वारा युवाओं को जागरुक एवं शक्तिशाली बनाने के उद्देश्य को लेकर आजी चौकड़ी से हैप्पी विजेल त्रंबा तक 15 किलोमीटर की सुंदर स्वर्णिम पदयात्रा का आयोजन किया गया। इसमें 250 युवा भाई-बहनों ने भाग लिया एवं राष्ट्रध्वज के साथ भारत माता की झाँकी भी आयोजित की गई।

तब मैंने अपनी जर्नी शुरु की....

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

आज आप यहाँ आये हैं। आज आप जो डिसिज़न लेंगे वो आपके आज और आगे का डिसाइड करेगा। जैसे आज आप यहाँ बैठे हैं एक दिन मैं वहाँ बैठी थी। बीस साल पुरानी बात है। सिर्फ फर्क ये है कि वो हॉल इतना बड़ा भी नहीं था। एक छोटा-सा हॉल था। और जैसे आप ऊषा दीदी और शीलू दीदी को रोज़ सुनते हैं मैंने तीन दिन आकर, वहाँ बैठकर उनको ही सुना बस। तब तक मुझे बहुत ज़्यादा समझ में भी नहीं आया था। लेकिन उन्होंने एक बात कही थी कि परमात्मा डायरेक्ट पढ़ाते हैं। मेरी माता जी ब्रह्माकुमारीज़ में आती थीं। वो मुझे हमेशा बतातीं कि भगवान पढ़ाते हैं, भगवान पढ़ाते हैं। तार्किक दिमाग को देखकर, वैज्ञानिक दिमाग, मैं प्रूफ(प्रमाण) चाहती थी। परमात्मा को प्रूव(साबित करना) नहीं किया जा सकता, आत्मा को प्रूव नहीं किया जा सकता। उनको सिर्फ महसूस किया जा सकता है। अब मेरी ज़िद्द शुरु होती है कि आप पहले प्रूव करो। तब तो मैं जर्नी(यात्रा) शुरु करूँ। वो कहने लगे कि आप जर्नी शुरु करो तो प्रूफ अपने आप सामने आ जायेगा। ऐसे कौन जर्नी शुरु करेगा जब तक आप प्रूफ नहीं करोगे कि आप जो कह रहे हैं वो राइट है।

इतनी सारी चीज़ें आपने बता दी हैं कि पहले आप सुबह चार बजे उठो और फिर रोज़ स्टडी भी करो। और फिर ऐसे चलो, ये करो ये नहीं करो, ये खाओ, ये नहीं खाओ। ये राइट है इतना सब करो तो फिर उसके बाद आप प्रूफ दोगे! कभी-कभी न अपनी ज़िद्द के कारण, अपने अहंकार के कारण हम अपना कभी-कभी क्या कर देते हैं? नुकसान कर देते हैं। फिर मुझे किसी ने एक बहुत सुन्दर बात बताई। किसी ने कहा कि आप मैथ स्टूडेंट हो तो फिर कहा कि अगर मैथ में कुछ प्रूफ करना पड़ता है तो कैसे शुरु करते हैं? फर्स्ट लाइन क्या लिखते हैं आप? ए इज़ इक्वल टू बी, और लास्ट लाइन क्या लिखते हैं देयर फॉर ए इज़ इक्वल टू बी। और बीच में क्या होता है जर्नी ऑफ लाइफ। आप प्रूफ करके दिखाएं कि ए इज़ इक्वल टू बी बिफोर स्टार्टिंग लैट ए इज़ इक्वल टू बी। हमें ऐसे ही सिखाया है कि पहले अज़म्शन से स्टार्ट करना होता है फिर उसको प्रूफ करना होता है। और एंड में हम सॉल्यूशन पर आ जाते हैं। कहते बस वही करना है आप अज़म्शन से स्टार्ट करो कि गॉड इज़ यूअर(भगवान आपका है)। फिर ये भी बात राइट कि अज़म्शन से स्टार्ट करो।

फिर मैंने दूसरा क्वेशचन पूछा कि कितने दिन लगेंगे पहुंचने में! देयर फॉर ए इज़ इक्वल टू बी। वो बोले कि वो तो आप पर डिपेंड करता है ना कि आप बाकी पन्ने कितने प्यार से भरते हैं। कोई बहुत जल्दी पहुंच जाते हैं और किसी को टाइम लगता है। किसी को थोड़ा ज़्यादा टाइम लगता है। लेकिन जो राइट तरह से लिख रहा है तो वो ए इज़ इक्वल टू बी पर ज़रूर पहुंच जायेगा। मुझसे कभी-कभी कोई न कोई पूछता कि आप यहाँ क्यों आये हैं? उनको लगता कि मेरे जीवन में कुछ प्रॉब्लम आई होगी इसीलिए मैं यहाँ आई हूँ। तो वो मुझसे प्यार से पूछते कि आपके जीवन में क्या हुआ था? मैंने कहा कुछ भी नहीं। बोले कि आप इंजीनियरिंग कर रहे थे आपने उसको छोड़ दिया और आप यहाँ आ गये। तो कुछ तो ज़रूर हुआ होगा! ये हमारे बिलीफ सिस्टम है। एक हमारा बिलीफ सिस्टम है कि एक ये हमारा जीवन है और एक दूसरी जीवन है। आध्यात्मिकता एक अलग जीवन नहीं है। हमें लगता है कि एक ये लाइफ है फैमिली, रिश्ते, जॉब, प्रोफेशन और एक है स्प्रिचुअलिटी। क्या ये सच है? इसीलिए आध्यात्मिक जीवन कोई अलग नहीं है।

एक ग्रुप हमारे साथ आया उसमें एक भाई था 40-45 की एज के आसपास होगा। कहते मैंने अपने सीनियर को बोला कि सर मैं शुक्रवार, शनिवार और रविवार छुट्टी पर जा रहा हूँ। उन्होंने कहा कि ठीक है चले जाओ। कहते फिर मैंने सोचा कि मैं इनको बता तो दूँ कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। तो कहते मैंने उनको बताया कि सर मैं स्प्रिचुअल रिट्रीट के लिए माउण्ट आबू जा रहा हूँ। तो उनका फर्स्ट क्वेश्चन उसके बाद था कि ये थोड़ा जल्दी नहीं है? हम यही सोचते हैं? क्या हमने यह सोचा था कि यह जीवन का कौन-सा चरण है? सोचने की कला। सही सोचना, सही बोलना, सही व्यवहार करना और इमोशनली पॉवरफुल रहना ये जीवन की कौन-सी एज में शुरु करना चाहिए? उन्होंने बताया कि वो पहले से ही थोड़ा लेट हो गया। चालीस साल बीत गए जैसे उम्र बढ़ती है तो संस्कार थोड़े से कैसे होते जाते हैं, कड़क होते जाते हैं। और इगो थोड़ा-सा क्या होता जाता है? बढ़ता जाता है। लेकिन हमारी बॉडी, एज ये मतलब नहीं रखती है मेरे अपने संस्कारों को चेंज करने में। ये डिपेंड करता है हमारे दृढ़ निश्चय पर, मेरी इच्छा शक्ति पर। क्यों बदलना है, हम जानते हैं। कैसे चेंज करना है, हम जानते हैं। महत्वपूर्ण ये है कि हम चेंज होना चाहते हैं। चेंज होना चाहते हैं तो एक थॉट में चेंज हो जायेंगे। तो तब मैंने अपनी जर्नी शुरु की।

- क्रमशः

यह जीवन है

किसी को भी बुरा नहीं समझें, बुरा न चाहें और बुरा न करें। किसी को बुरा समझने से हम भी बुरे बन जाएंगे और हमारे में भी वो बुराई आ जाएगी।

क्योंकि जब हम किसी को बुरा समझते हैं इसका मतलब हम अपने में बुराई को निमंत्रण देते हैं। जिससे उस बुराई के साथ हमारा भी सम्बन्ध जुड़ जाता है। इसलिए हमें कभी भी किसी की भी बुराई को नहीं देखना है। हमेशा सभी की अच्छाई को ही देखना है।

तभी हम अपने में अच्छाई को धारण कर पाएंगे। और जब हम सभी अपने जीवन में अच्छाई को धारण करेंगे तो सारा संसार अच्छा बन जाएगा अर्थात् सुखी बन जाएगा।

मुक्ताई नगर-महा.। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् समूह चित्र में तालुका सभापति सुनीता चौधरी, राष्ट्रवादी कांग्रेस कार्यकर्ता किशोर चौधरी, ब्र.कु. वर्षा, ब्र.कु. सुषमा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें

अहमदाबाद-इंडिया कॉलोनी। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में 'बर्फीले अमरनाथ दर्शन' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए लेउआ पटेल समाज के चेयरमैन नंदु भाई पटेल, ब्र.कु. भानु दीदी, कोठिया अस्पताल के चेयरमैन वीनु भाई, डॉ. नैनेस पटेल तथा अन्य।

चंदला-छतरपुर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत 'मेरा देश मेरी शान अनदेखा भारत' विषय के तहत भारत के विरासत स्थलों के लिए साइकिल रैली निकाली गई। इसके अंतर्गत गांव की बेटियों ने साइकिल चलाकर जन जागृति का संदेश दिया। इस दौरान सरपंच राम मूर्ति दुवेदी, मंदिर ट्रस्टी जगतनारायण शुक्ला, ब्र.कु. रूपा बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन आदि उपस्थित रहे।

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पार्वती शिक्षा महाविद्यालय मदनपुर सिलफिली में बी.एड. कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए आयोजित चार दिवसीय आध्यात्मिक कार्यशाला के दौरान सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। इस मौके पर प्रो. ज्योति बहन, कॉलेज स्टाफ तथा तीन सौ विद्यार्थी उपस्थित रहे।

बलौदा बाज़ार-छ.ग.। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिवध्वज के नीचे संकल्प करते हुए पुनीत यादव,राइस अध्यक्ष, तेजस कुमार चंद्राकर,जिला श्रम अधिकारी, ब्र.कु. नीरा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

कापसी-महा.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनंदा बहन, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की सदस्या ब्र.कु. प्रेमलता बहन, पंचायत समिति कामठी की कृषि अधिकारी रूपाली गजभिये, पुलिस पाटील, सरपंच, ग्राम पंचायत पदाधिकारी एवं अन्य गणमान्य नागरिकों सहित बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।

धार-म.प्र.। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् टी.आई. समीर पाटीदार को ईश्वरीय सौगात एवं प्रसाद भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सत्या बहन। इस मौके पर डॉ. प्रदीप रावत, डॉ. कमल सिंह चौहान, डॉ. दिलीप सोलंकी, डॉ. लता चौहान तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

परमात्म ऊर्जा

विघ्नों को मिटाने की युक्तियां अगर सदैव साथ हैं तो पुरुषार्थ में ढीले नहीं होंगे। युक्तियां भूल जाते हैं तो पुरुषार्थ में ढीला हो जाता है। एक-एक बात के लिए कितनी युक्तियां मिली हैं? प्राप्ति कितनी बड़ी है और रास्ता कितना सरल है। जो अनेक जन्म पुरुषार्थ करने पर भी कोई नहीं पा सकते। वह एक जन्म के भी कुछ घड़ियों में प्राप्त कर रहे हो। इतना नशा रहता है ना! 'इच्छा मात्रम अविद्या' ऐसी अवस्था प्राप्त करने का तरीका बताया। ऐसी ऊंची नॉलेज और कितनी महीन है। जीवन में इतना ऊंचा लक्ष्य कोई रख नहीं सकता कि मैं देवता बन सकता हूँ। यह कब सोचा था कि हम ही देवता थे? सोचा क्या था और बनते क्या हो? बिन मांगे अमूल्य रत्न मिल जाते हैं। ऐसे पदमा पदम भाग्यशाली अपने को समझते हो? प्रेसिडेंट आदि भी आपके आगे क्या हैं? इतनी ऊंची दृष्टि, इतना ऊंचा स्वमान याद रहता है कि कब भूल भी जाते हो? स्मृति-विस्मृति की चढ़ाई उतरते-चढ़ते हो? गन्दगी से मच्छर आदि प्रकट होते हैं इसलिए उनको हटाया जाता है। वैसे ही अपनी कमज़ोरी से माया के कीड़े पकड़ लेते हैं। कमज़ोरी को आने न दो तो माया आयेगी नहीं।

सदैव यह याद रखो कि सर्वशक्तिवान के साथ हमारा सम्बन्ध है। फिर कमज़ोरी क्यों? सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे होते भी माया की शक्ति को खलास नहीं कर सकते। एक बात सदैव याद रखो कि बाप मेरा सर्वशक्तिवान है। हम सभी से श्रेष्ठ सूर्यवंशी हैं। हमारे ऊपर माया कैसे वार कर सकती है! अपना बाप, अपना वंश याद रखेंगे तो माया कुछ भी नहीं कर सकेगी।

स्मृति स्वरूप बनना है। इतने जन्म विस्मृति में रहे फिर भी विस्मृति अच्छी लगती है? 63 जन्म विस्मृति में धोखा खाया, अब एक जन्म के लिए धोखे से बचना मुश्किल लगता है? अगर बार-बार कमज़ोर बनते, चेकिंग नहीं रखते तो फिर उनकी नेचर ही कमज़ोर बन जाती है। अवस्था चेक कर अपने को ताकतवर बनाना है, कमज़ोरी को बदल शक्ति लानी है।

कथा सरिता

दूसरों की मदद करना सीखें...

एक दिन की बात है। सुनीता को बुखार चढ़ गया, उसकी माँ उसको डॉक्टर के पास लेकर गयी तो पता चला कि उसको डेंगू हो गया है। डॉक्टर ने पचास हज़ार रूपये मांगे। सुनीता की माँ के पास कुछ गहने थे। उसने अपने गहनों को बेच दिया और कुल मिलाकर चालीस हज़ार ही हो पाया। सुनीता की माँ ने डॉक्टर से बोला आप इतना ले लो और मेरी सुनीता को बचा लो। लेकिन डॉक्टर ने बोला हम तो पूरे पैसे लेने के बाद ही एडमिट करते हैं, उसकी माँ रोती रही लेकिन कोई ने नहीं सुना।

वह अपनी मालकिन के पास गयी और उसको सारी बात बतायी तो उसने भी बोला मैं नहीं दूंगी इतना पैसा। सुनीता की माँ का रो-रो कर बुरा हाल हो गया था, पूरा दिन बीत गया और उसकी बेटी की तबियत और खराब हो गयी। उसकी माँ ने पूरी रात कुछ भी नहीं खाया और कब सो गयी यह भी पता नहीं चला। सुबह जब वो सोकर उठी तो उसने देखा कि सुनीता अभी भी सोयी है, उसके पास जाकर उसके हाथ को पकड़ा तो डर गयी और ज़ोर से रोने लगी क्योंकि सुनीता मर चुकी थी। सिर्फ दस हज़ार रूपये के लिए किसी ने भी उसकी मदद नहीं की और उसकी जान चली गयी।

शिक्षा : कब तक हम लोग ऐसा करेंगे, पैसा ही सबकुछ नहीं होता है। आज सुनीता के साथ है कल आप के साथ भी ऐसा हो सकता है, इसलिए दूसरों की मदद ज़रूर करें।

बुरी आदत

हम सब लोग किसी न किसी बुरी आदत से परेशान रहते हैं और बहुत ही कोशिश करने के बाद वो आदत नासूर बन जाती है और उस आदत को छोड़ना बहुत मुश्किल हो जाता है। अगर हम लोग अपनी बुरी आदत को कंट्रोल कर लें तो कभी भी असफल नहीं होंगे। बहुत समय पहले की बात है, एक बहुत ही धनी आदमी था, उसका एक ही बेटा था और उसकी बहुत सारी आदतें बहुत ही बुरी थीं। जब भी उसका पिता उसको बुरी आदत छोड़ने को बोलता तो बस वह एक ही जवाब देता - अभी तो मैं छोटा हूँ, बड़े होने पर सब छूट जायेगी। लेकिन उसका पिता इस बात से बहुत ही चिंतित रहता था।

एक दिन उसके नगर से एक महात्मा जी आये तो उसको पता चला और वह महात्मा जी के पास गया। उनको अपने बेटे के बारे में सब कुछ साफ-साफ बता दिया। फिर महात्मा जी ने बोला - आप कल सुबह अपने बेटे को मेरे पास लेकर आइये। अगले दिन सुबह ही वह अपने बेटे को लेकर महात्मा जी के पास पहुंच गया। महात्मा जी उसको लेकर बगीचे में चले गए और रास्ते में एक छोटा-सा पेड़ पड़ा, महात्मा जी ने उस लड़के से उसे उखाड़ने को कहा तो वह तुरंत गया और पेड़ को उखाड़ कर फेंक दिया। थोड़ी दूर और जाने पर एक और पेड़ आया तो महात्मा जी ने उसको भी उखाड़ कर फेंकने को कहा- उसने उसको भी उखाड़ दिया।

लड़के के पिता जी सबकुछ बहुत ही ध्यान से देख रहे थे। कुछ दूर और चलने के बाद एक और बड़ा और मजबूत-सा पेड़ दिखाई दिया, महात्मा जी ने लड़के से कहा- इसको भी उखाड़ दो, वह बहुत ही तेजी से गया लेकिन वह उस पेड़ को नहीं उखाड़ पाया। क्योंकि वह बहुत मजबूत हो गया था। फिर महात्मा जी ने उस लड़के को बुलाया और बोला जिस तरह तुम इस बड़े पेड़ को नहीं उखाड़ पा रहे थे उसी तरह तुम अपनी बुरी आदत बड़े होने पर नहीं बदल सकते हो। लड़का इस बात को समझ गया और अपनी सारी बुरी आदत छोड़ने की कसम खा ली।

सीखः इस कहानी से हमें यही सीख मिलती है कि अगर हम लोग अपनी बुरी आदत जल्दी नहीं छोड़ेंगे तो बाद में हम लोगों को बहुत ज़्यादा परेशानी होगी।

कतारगाम-सूरत(गुज.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लक्ष्मीकान्त पाठशाला,कतारगाम में आयोजित 'आध्यात्मिक झाँकी एवं होलोग्राफिक प्रोजेक्टर शो' कार्यक्रम में दक्षेशभाई मावाणी,बीजेपी कॉर्पोरेटर,वार्ड नं 6, साधनाबेन सावलिया,एस24 न्यूज़ ओनर, प्रवीणाबेन,महिला मोर्चा उपप्रमुख तथा अन्य गणमान्य लोगों व ब्र.कु. भाई-बहनों सहित बड़ी संख्या में शहर के लोग उपस्थित रहे।

ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. प्रियंवदा भसीन,अध्यक्ष,आई.एम.ए. ग्वालियर,चेयरमैन अपोलो हॉस्पिटल एवं रतन ज्योति नेत्रालय ग्वालियर, डॉ. सुनील अग्रवाल,प्रोफेसर सर्जरी गजरा राजा मेडिकल कॉलेज ग्वालियर,अध्यक्ष मध्य प्रदेश प्रोग्रेसिव मेडिकल टीचर्स एसोसिएशन, कमल माखीजानी,जिला अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी, ब्र.कु. आदर्श बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. डॉ. गुरुचरण भाई, ब्र.कु. प्रहलाद भाई, ब्र.कु. महिमा बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

राजयोग के प्रयोग ने बचाया मुझे

अनुभव

ब्र.कु. आदेश भाई,पीलीकोठी,दिल्ली

बात सन् 2001 की है। मुझे राजयोग का अभ्यास करते हुए करीब 3 वर्ष ही हुए थे। मैं एक कम्पनी वालों के साथ कार से नैनीताल घूमने जा रहा था। मेरे साथियों की 5 अन्य कारें भी चल रही थीं। इसी बीच रास्ते में कालाढूंगी में एक कार से मेरा ऐसा एक्सीडेंट हुआ जिससे कार पहाड़ी से करीब 25-30 फीट की गहराई में गिर गई। जैसे ही हमारी कार गहरी खाई में पलटी तभी मेरा सिर जोर से शीशे में लगा और शीशा टूट गया और सारा कांच सिर में घुस गया। उस वक्त मुझे शरीर से बिल्कुल अलग होने का अनुभव हो रहा था। आँखों के सामने काली रात की तरह अंधेरा-सा छा गया, और तभी मुझे, मेरे सामने सफेद वस्त्रों में प्रजापिता ब्रह्मा बाबा दिखाई दिए और मैं ब्रह्मा बाबा से बात करने लगा- बाबा, किसी की गाड़ी खाई में गिर गई है, उस बिचारे को बहुत चोट लगी होगी इसलिए वो चिल्ला रहे हैं।

ब्रह्मा बाबा ने तीन बार मुझे कहा- बच्चे, तुम शान्त हो जाओ, सब ठीक हो जायेगा। इतना कहकर बाबा अंतर्ध्यान हो गये। जब मैं वापस शरीर में आया तो मेरे शरीर में बहुत भयंकर दर्द हो रहा था, तब मुझे पता चला कि अरे मैं ही तो गाड़ी के अन्दर हूँ। मेरी ही गाड़ी नीचे गिरी है, मुझे ही चोट लगी है, गंभीर चोट होने के कारण तब मैं बेहोश हो गया। हाथ भी फ्रैक्चर हो गये थे। 3-4 जगह से बहुत ज़्यादा खून बहा। सबके मुख से निकला यह बचेगा नहीं। अखबार वालों ने भी मेरा फोटो खींचा और दूसरे दिन अखबार में फोटो सहित छपा, "टोयोटा क्वालिस कार गहरी खाई में पलटी, चालक की मृत्यु।" कुछ लोगों ने हमें गाड़ी से निकाल कर कृष्णा नर्सिंग होम,हल्द्वानी में भर्ती कराया। वहां के डाक्टर ने कहा कि यह तो बचना बहुत मुश्किल है। मुझसे पूछा- तुम्हें कैसा लग रहा है? मैंने बोला- मुझे सांस लेने में बहुत तकलीफ हो रही है, तेज़ दर्द भी हो रहा है लेकिन मृत्यु का तनिक भी भय नहीं है। शरीर में दर्द है लेकिन मौत क्या होती है उसकी कोई परवाह नहीं थी फिर मुझे ऑक्सीजन दी गई। इसके बाद एम्बुलेंस से मुझे दिल्ली में एक नर्सिंग होम लाया गया। उस समय मेरे साथ कोई मित्र-सम्बन्धी नहीं थे। 3 दिन के बाद मेरे सिर से टूटा कांच निकाला गया। डॉ. बोला जीवन भर तुम्हें दर्द रहेगा। मैंने बाबा के कमरे में मेडिटेशन करने लिए कहा- बाबा के कमरे में मुझे दो भाई पकड़कर ले जाते थे। मैंने बाबा के कमरे में तीन-तीन घण्टे बैठकर योग करना आरम्भ किया। हमारे ब्रह्माकुमारी सेन्टर में भी सब भाई-बहनों ने शीघ्र स्वास्थ्य लाभ पहुंचाने के लिए राजयोग का प्रयोग किया। मैं बाबा के प्यार में खो जाता था।

तीन महीने के बाद शरीर का दर्द पूरी तरह ठीक हो गया। डॉक्टर भी आश्चर्य से कहने लगे कि ये तो बहुत बड़ा वण्डर है। तुम्हें 16 टांके लगे, सिर में इतना कांच भरा, तीन-तीन जगह फ्रैक्चर हुआ और आप इतना जल्दी कैसे ठीक हो गये! मैंने कहा- मैं नित्य राजयोग का अभ्यास करता हूँ। जब लौकिक सम्बन्धी आये तो उन्होंने हमें वह अखबार दिखाया। कहा देखो तुम्हारी तो मरने की न्यूज़ छपी है। मुझे नहीं मालूम था कि बाबा ने कौन-सी सेवा कराने के लिए मरजीवा जन्म दिया।

कुछ समय के पश्चात मुझे मानेसर,हरियाणा में परमआदरणीय दादी गुल्ज़ार जी की कार चलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तब मुझे एहसास हुआ कि शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा ने अपने रथ की सेवा कराने के लिए मुझे यह नया जन्म दिया। मुझे दादी हृदयमोहिनी जी से इतना अलौकिक प्यार मिला जिसे शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। अगर मैं मेरे जीवन में शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा द्वारा सिखाये जा रहे राजयोग का अभ्यास नहीं करता तो ऐसे भयंकर एक्सीडेंट से बचना असम्भव था। यह है राजयोग द्वारा परमात्मा की प्रत्यक्ष मदद की कमाल। मैं ब्रह्मा बाबा, शिव बाबा और परमआदरणीय दादी गुल्ज़ार जी सहित ब्रह्माकुमारी संस्था के समस्त भाई-बहनों का बहुत-बहुत शुक्रगुज़ार हूँ।

गोटेगांव-म.प्र.। जालम सिंह पटेल,पूर्व मंत्री एवं नरसिंहपुर विधायक को जन्मदिन की बधाई एवं ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मीना बहन तथा अन्य।

मुम्बई-घाटकोपर। 86वीं शिव जयंती के उपलक्ष्य में पंत नगर स्थित पीस पार्क में आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी, ब्र.कु. निकुंज भाई, निरंजन हीरानंदानी,रियल एस्टेट टायकून, महाथेरो भदंत राहुल बोधी जी,भिकू संघ प्रमुख, विजय पुराणिक,बेस्ट, श्रीधरन शेट्टी,रियल एस्टेट बिल्डर,साई लाइफ, ललित धर्माणी,एलडी ग्रुप आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। महाशिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर विशाल 'शिव संदेश शान्ति यात्रा' का शिव ध्वज दिखाकर शुभारंभ करते हुए एस.के. मुद्दीन, शरद अग्रवाल, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भावना बहन, डॉ. एस.के. पांडे, डॉ. पुष्पा पांडे, डॉ. श्यामजी रावत तथा अन्य। इस विशाल यात्रा में लगभग 1000 भाई-बहनें सम्मिलित हुए।

राजकोट-पंचशील(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस(दिव्यता दिवस)पर राजकोट डायमंड पार्टी प्लॉट में आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, डॉ. गैरांग वाघाणी, दक्षा बहन वघासीया तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शहर में यूथ विंग, रूरल डेवलपमेंट विंग, मेडिकल विंग, ट्रान्सपोर्ट विंग तथा बिज़नेस विंग के पाँच प्रोजेक्ट का शुभारंभ किया गया।

अहमदाबाद-इंडिया कॉलोनी। महाशिवरात्रि पर संध्या महाआरती के समय असिस्टेंट पुलिस कमिश्नर अजय चौधरी व उनके परिवार का स्वागत करते हुए ब्र.कु. भानु दीदी।

अलीराजपुर-म.प्र.। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'श्रेष्ठ दुनिया के निर्माण में विभिन्न धर्मों का योगदान' विषयक सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जी.एल. भाटिया,गायत्री परिवार, संजय गुप्ता,समाजसेवी, अविनाश वाघेला,सहायक परियोजना समन्वयक, बलिराम बिलोरे,प्राचार्य, संजय गुप्ता,सिविल कॉन्ट्रैक्टर समाजसेवी, ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. माधुरी बहन तथा अन्य।

खंडवा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ की स्थानीय मुख्य संचालिका ब्र.कु. शक्ति दीदी ने शासन द्वारा चलाई गई योजना के अंतर्गत एलआईजी कॉलोनी स्थित गुरु गोविंद सिंह पार्क को गोद लिया। इस पार्क में संस्थान की ब्र.कु. बहनों एवं संस्थान से जुड़े अन्य भाई-बहनों के द्वारा पौधारोपण किया गया।

इंदौर-वेंकटेश नगर एक्सटेंशन। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में हाई लिंक ग्रुप ऑफ अपार्टमेंट्स के डायरेक्टर वीरेन्द्र गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए कालानी नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जयंती दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सुजाता बहन, ब्र.कु. कविता बहन तथा ब्र.कु. कौशल भाई।

लखनपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अदानी ट्रेनिंग सेंटर में 'तनाव मुक्त जीवन शैली' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. पुष्पा बहन ने तनाव से मुक्त रहने की विधि बतायी। इस अवसर पर अदानी कोल माइन्स के मानव संसाधन जी.एम. गौरव जैन, आई.आर. प्रमुख बसंत कसेला, कल्याण अधिकारी निलेश मिश्रा, एसोसिएट मैनेजर उत्तम झा तथा अदानी ग्रुप के लगभग सौ कर्मचारी उपस्थित रहे।

रतलाम-राजीव गांधी सिविक सेंटर(म.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् प्रतिज्ञा करते हुए गुरदीप सिंह जी,गुरुद्वारे के ज्ञानी, नवीन व्यास,आर्किटेक्ट व्यास एंड कंपनी, मंजू सोनी,हाईकोर्ट एडवोकेट, बी.एस. कोठारी,रिटायर्ड डी.आर., जुझारसिंह भाटी,हास्य कवि रतलाम, ब्र.कु. आरती, असगर अली रावटी वाला,बोहरा समाज प्रतिनिधि, ब्र.कु. भारत सिंह चौहान, महेन्द्र शर्मा,बीजेपी वरिष्ठ नेता, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. पूजा तथा अन्य भाई-बहनें।

पुणे-सांगवी(महा.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर अखिल सांगवी ज्येष्ठ नागरिक संघ द्वारा उनके सांगवी कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए नगरसेवक प्रशांत शितोळे, ब्रह्माकुमारीज़ की स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संजीवनी दीदी, स्वाती काळे बहन तथा सर्व ज्येष्ठ नागरिक।

पंचमढ़ी-कृष्णा नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र द्वारा सतना जिला जेल, सरदार वल्लभभाई पटेल जिला अस्पताल एवं यूसीएल फैक्ट्री में 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत आयोजित प्रेरक कार्यक्रम में प्रभाग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. संध्या दीदी,पंचमढ़ी, ब्र.कु. रानी बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. पूजा बहन,फरीदाबाद सहित अधिकारीगण, जवान तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

जीवन में निर्णय कौन ले सकता है...!

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

हम सभी समाज के वो हिस्से हैं जिसे कभी काटा नहीं जा सकता, अलग नहीं किया नहीं जा सकता। उसको अलग तरीके से देखा नहीं जा सकता। लेकिन इतने सारे समाज में वर्ग हैं, इतने सारे लोग समाज में काम कर रहे हैं सभी अपने-अपने घरों में, अपने-अपने कामों में, अपने-अपने ऑफिस में व्यस्त हैं। लेकिन ज़िंदगी के कुछ ऐसे निर्णय होते हैं जो शुरु में कुछ वर्षों के बाद लेने पड़ते हैं लेकिन वो निर्णय लेने में कई बार जल्दी होती है तो कई बार देर हो जाती है। लेकिन कई जो इस निर्णय को जल्दी ले लेते हैं वो जीवन में शायद वो कुछ कर पाते हैं जो उनको करना चाहिए। लेकिन कई बार निर्णय लेने में देरी हो जाती है और वो निर्णय सही है, गलत है का फैसला भी हम शायद अंतर्द्वंद्व की स्थिति में करते हैं। वो निर्णय जो हम लेते हैं उससे हम कई बार मात भी खा जाते हैं। तो आज का जो विषय है इसी गूढ़ प्रश्न को लेकर है कि निर्णय आखिर ले कौन सकता है।

आध्यात्मिकता एक साइलेन्स है। जब हम गहरी शांति के साथ बैठकर किसी भी चीज़ को सोचते हैं, महसूस करते हैं तो हमको बहुत सारे प्रश्नों का हल मिलता है। अगर पूरी दुनिया को थोड़ा-सा दूर से देखते हैं कि हर कोई किसी न किसी बन्धन से जकड़ा हुआ है या जुड़ा हुआ है। बन्धन से जकड़ा ही होता है खैर जुड़ा तो होता नहीं। और जब भी कोई व्यक्ति कोई कार्य कर रहा होता है तो कोई न कोई उसका मोटिव होता है, कोई न कोई उद्देश्य होता है, कोई न कोई ज़रूरत होती है, कोई न कोई नियत होती है उसी आधार से जुड़ता है तो व्यक्ति जब ये सब कर रहा होता है तो किसी न किसी के लिए कर रहा होता है। एक सोच, एक संकल्प चला कि इस दुनिया में कन्फयूज़ कौन है और शक्तिशाली कौन है! दोनों को हम अलग-अलग दायरों से चेक करते हैं। इस दुनिया में शक्तिशाली वो है जो इंसान निर्बंधन है, बंधनमुक्त है मन से। तन से नहीं भी हो सकता है लेकिन मन से तो खैर हो ही सकता है। तो जो व्यक्ति बंधनमुक्त है वो हमेशा बंधनमुक्त है।

मतलब जिस व्यक्ति के दिल में इस दुनिया का कोई भी व्यक्ति, कोई वैभव, कोई पदार्थ, उसके किसी भी चीज़ के लिए आड़े नहीं आता हो,वो व्यक्ति बहुत शक्तिशाली है। लेकिन जिस भी व्यक्ति को इस दुनिया में आगे बढ़ने का भाव है, मन करता है, बहुत कुछ उमंग-उत्साह लेने का मन करता है, कहीं कुछ जुड़ाव है, आसक्ति है, आकर्षण है, बहुत गहरा लगाव है वो व्यक्ति कभी भी इस दुनिया में एक निष्पक्ष रूप से निर्णय लेने में असमर्थ होता है। वो क्यों, क्योंकि किसी भी व्यक्ति का किसी भी स्थिति में चाहे वो माता से लगाव हो, पिता से, वस्तु से, घर से, परिवार से, बिजनेस से वो व्यक्ति कभी भी कोई निर्णय लेने में असक्षम है। उसको डर है वो हमेशा अपने पूर्वाग्रह की स्थिति से त्रस्त और तनाव ग्रस्त रहता है कि क्या होगा। सबसे पहले उसको अपनी फैमिली, अपना बैकग्राउंड याद आता है। बाद में उसको समाज और सोसाइटी की स्थिति याद आती है।

तो आप पूरी दुनिया को ऐसे ऑब्ज़र्व करके देखें, बड़े ध्यान से देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि चाहे वो आध्यात्मिकता के क्षेत्र में ही क्यों न हो। चाहे वो कितना ही गहराई से आत्मा को जानता हो, समझता हो लेकिन समझने के बावजूद भी अगर उसके निर्णय लेने में कहीं असक्षम स्थिति है तो उसका कारण है आसक्ति, आकर्षण। कहीं न कहीं गहरा लगाव। और वो लगाव उसको निर्णय लेने नहीं देता। अगर निर्णय लेता भी है तो वो झुकाव वाला लेता है, एक तरफा लेता है और हमेशा अपने आप को फंसा हुआ महसूस करता है। तो खुशी का जो दायरा है वो बंट जाता है। खुशी कभी बांटी नहीं जाती। खुशी का कभी बंटवारा नहीं होता। लेकिन मैंने आपकी खुशी के लिए किया, मैंने इस बात के लिए किया, नहीं। कहते हैं समाज एक सोशल फैक्ट है। इंग्लिश में कहावत है सोसाइटी के सोशल फैक्ट। मतलब सामाजिक तथ्य क्या कहता है हर कोई समाज को ज़िम्मेदार ठहराता है। लेकिन समाज हमसे है, हम समाज से नहीं। तो हमारा निर्णय समाज निर्धारित करता है।

हम अगर समाज के दायरों को देखकर निर्णय लेने लग गये तो अपने कल्याण को भूल जायेंगे। समाज के कल्याण को भूल जायेंगे, देश के कल्याण को भूल जायेंगे और स्थिति बदल जायेगी। आज समाज डिसाइड कर रहा है हमें निर्णय लेने में। माना जो हमारा खुद का समाज है, जिनके बीच में हम रहते हैं, पलते हैं, बढ़ते हैं वो लोग हमारे लिए निर्णय लेते हैं और हम भी उनके लिए निर्णय लेते हैं इसलिए पूरी ज़िंदगी दुःखी रहते हैं।

तो निर्णय इस दुनिया में वो ले सकता है जो निष्पक्ष हो, जो बंधनमुक्त हो, जो अपने आपको कल्याणकारी भाव से रखता हो, जो कल्याणकारी सोच वाला हो, जो बेहद की सोच वाला हो वो व्यक्ति कभी भी इस दुनिया में असफल नहीं हो सकता। इसीलिए अगर निर्णय लेना है तो बेहद की सोच और बेहद के कल्याण की बात को लेकर आगे बढ़ें और जीवन में सफल हों।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

मन की बातें
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

अनुभव - मेरा नाम भैरव नाथ है। मेरा अपनी साथी टीचर से चार महीने पहले झगड़ा हो गया था। मैंने आपके समाधान कार्यक्रम में क्षमा करने और क्षमा मांगने की बात सुनी तो मैंने सुबह उठकर ये प्रयोग किया। चार दिन मैंने ये प्रयोग किया और पांचवें दिन ही मेरे साथी टीचर का फोन आ गया मुझे माफ करना मुझसे गलती हुई। मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। मुझे जैसे अपने कानों पर तो विश्वास ही नहीं हुआ कि ये कैसे हो गया। मैं उनसे मिलने जा ही रहा था कि मेरी पत्नी ने मुझे रोका मत जाओ घर में कुछ काम है। मैं नहीं जा पाया लेकिन वो खुद ब खुद मेरे घर पर आये। सचमुच मैंने ये पाया कि राजयोग के प्रयोग अद्भुत हैं, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रश्न : मैं रेलवे से रिटायर्ड चन्द्रकिशोर ठाकुर हूँ। सभी बच्चे वेल सेटल्ड हैं। घर में भी सभी सुख-सुविधाओं के साधन हैं। किसी चीज़ की कोई कमी नहीं है। लेकिन फिर भी मेरा मन बहुत परेशान रहता है। कई बार तो मैं अकारणें ही बहुत परेशान हो जाता हूँ। इसका क्या कारण है, कृपया मुझे कुछ सुझाव दें?

उत्तर : मैं आपको सबसे पहले राजयोग सीखने की सलाह दूँगा और सिर्फ राजयोग ही नहीं बल्कि आप रोज़ सेवाकेन्द्र पर जाकर ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण करें। ये जो आपको परेशानी रहती है, खुशी नहीं रहती या बिना मतलब मन उचाट-सा रहता है, इसके कई कारण हो सकते हैं। निगेटिव थिंकिंग हो सकती है। आप फ्री रहते हैं तो अगर टीवी ज़्यादा देखते हैं तो भी ये कारण बन सकता है। क्योंकि आजकल टीवी, इंटरनेट पर बहुत निगेटिव चीज़ें आ गई हैं जिनके लोग शिकार हो रहे हैं। और दूसरा कारण जो देखने में आता है कि जन्म-जन्म का जो कार्मिक अकाउंट होता है। हमने हज़ारों साल से जो कर्म किए हैं वो सबकॉन्शियस माइंड(अवचेतन मन) में प्रिंट हैं, छुपे हुए हैं तो उनसे निगेटिव एनर्जी बहुत निकल रही है क्योंकि मनुष्य के पाप ज़्यादा रहे और पुण्य कम। विकारों को भी हम पाप ही कहते हैं। विकार और पाप दोनों मिक्स होकर सबकॉन्शियस माइंड में जो स्टोर हैं, भरे हुए हैं उनसे जो लगातार निगेटिव एनर्जी ब्रेन को पहुंच रही है वो भी मनुष्य को कहीं न कहीं परेशान करती रहती है। इसलिए अगर आप ईश्वरीय ज्ञान लेंगे तो आपको रोज़ नये थॉट्स मिलेंगे, और जीवन जीने का एक नया तरीका मिलेगा। आपके पास जो फ्री टाइम रहता है उसको कुछ अच्छे कार्यों में, सेवाओं के कार्य में लगाने का आपको प्लान मिलेगा, एक अच्छी प्लानिंग मिलेगी। और जब आप राजयोग का अच्छे से अभ्यास करेंगे तो आपके अन्दर जो निगेटिव एनर्जी है या फिर जो कार्मिक अकाउंट हैं, बुरी चीज़ें जो सबकॉन्शियस माइंड में भरी हुई हैं वो क्लीन होती जायेंगी और आपका मार्ग साफ होता जायेगा। और आप अपनी जीवन की अंतिम यात्रा को एन्जॉय करेंगे।

प्रश्न : मेरी बेटी ने दो मास पहले 12वीं क्लास का रिज़ल्ट आने के बाद सुसाइड कर लिया। वो पास हो गई थी। परिवार की तरफ से भी उसपर कोई दबाव भी नहीं था। उसके सभी दोस्तों से भी हमने बात की लेकिन ऐसी-वैसी कोई बात नहीं थी। हमारी समझ में ही नहीं आ रहा कि उसने ऐसा क्यों किया! घर का माहौल तब से बहुत गमगीन रहता है। मैं बाबा के ज्ञान में हूँ लेकिन मन बहुत अशांत हो गया है, क्या करूँ?

उत्तर : क्या होता है, सुसाइड करने के बाद आत्मा भटक जाती है, उसको पुनर्जन्म नहीं मिलता। उसे कुछ अच्छे वायब्रेशन्स की ज़रूरत होती है जिससे उसका मन शांत हो जाये। चाहे उसने सुसाइड इमोशनल होके कर लिया हो। जो कुछ भी किया तब आत्मा बहुत पछताती है। क्योंकि जब उसे पुनर्जन्म नहीं मिलता है तो इसी कारण से वायब्रेशन्स बहुत निगेटिव रहते हैं क्योंकि बहुत बार वो वहीं विचरण करती है। अब वो हैल्प चाहती है लेकिन मांगे कैसे। उसके पास अब शरीर नहीं है। वो आवाज़ नहीं दे सकती। जैसा कि हम बहुत बार कहते आये कि कोई भी व्यक्ति जब सुसाइड करता है तो उसकी अंतिम स्थिति जो होती है दुःखभरी, बहुत अशांति की होती है। वो वैसी ही बनी रहती है। तो उसके वो वायब्रेशन्स घर में आते रहते हैं। इसलिए घर का वातावरण बड़ा ही गमगीन, त्रस्त रहता है। आपने राजयोग सीखा है। तो मैं आपको राय दूँगा कि दिन में दो बार आधा-आधा घंटा अपने घर में मेडिटेशन करेंगे। और उस आत्मा के लिए शांति के वायब्रेशन्स देंगे। ताकि उसका चित्त शांत हो जाये। अब ज़रूरत इस चीज़ की है उसका चित्त शांत होगा तो आपका चित्त भी शांत होगा। उसको पुनर्जन्म मिलेगा तो आप भी निश्चिंत हो जायेंगे। जैसे घर का व्यक्ति कोई भटक रहा हो और उसको ठिकाना मिल जाये तो घर वालों का चित्त भी शांत हो जाता है, निश्चिंत हो जाते हैं। तो जब उसको ठिकाना मिलेगा तब आपके चित्त को भी चैन आ जायेगा। पहले 21 दिन करें। फिर 21 दिन करें और फिर 21 दिन करें। तीन बार 21-21 दिन, आप अपने घर में इस तरह के गुड वायब्रेशन्स, शांति के वायब्रेशन, प्युरिटी के वायब्रेशन फैलाने के लिए मेडिटेशन करें। लेकिन आप उस आत्मा के लिए कुछ पुण्य भी करें। और पुण्य में बहुत बड़ा पुण्य होता है कि भगवान को भोग लगवा देना उनके निमित्त। तो परमात्म ब्लैसिंग भी उसे मिलने लगती हैं और उसका चित्त भी शांत होने लगेगा। दूसरा उसके निमित्त पवित्र आत्माओं को, ब्राह्मण आत्माओं को ब्रह्मा भोजन खिला देना ये बहुत बड़ा पुण्य है। ये सब कार्य आपको अवश्य करने चाहिए।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

स्थिति को शक्तिशाली बनाने के लिए इतना करें...!

मुरलियों से पावरफुल बातें लिखकर खुद को पावरफुल बनायें...

सेवाओं का बल भी स्थिति में बल भरता है। कुछ धारणाओं का बल भी हमारे योग के बल को नष्ट होने से बचाता है। धारणाओं का बल, जैसे 'मैं और मेरा', इसका त्याग। अगर ये दोनों अवगुण हैं तो जैसे हमारी शक्तियों के लिए हमारे अंदर लीकेज है। वो बहकर नष्ट होती रहेंगी। साथ में ज्ञान का बल, ये बात बहुत ही उपयोगी है। कइयों ने इसे यथार्थ समझा है और कर भी रहे हैं। मैंने तो इस बात को जीवन भर किया है इसलिए आपको कहता हूँ... ज्ञान की मुरलियाँ रोज़ सुन-सुन कर उनमें से कुछ सुंदर बातें अलग से अपने पास नोट करें। पच्चीस सुंदर बातें लिखेंगे। दो पेज पर नहीं पच्चीस बातें, पच्चीस पेज पर लिखें। और वो भी मोटे-मोटे अक्षरों में। कुछ दिन तक रोज़ उन्हें पढ़ते जायें। स्थिति में बल भरता जायेगा। स्थिति अचल-अडोल होने लगेगी।

मान लो ड्रामा का खेल चल रहा है और आपने बाबा की ये बात लिख ली है अपनी डायरी में कि 'ड्रामा बिल्कुल एक्यूरेट चल रहा है, ये बिल्कुल कल्याणकारी है, सभी अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं, यहाँ किसी का कोई दोष नहीं है' और आपने पढ़ लिया, तो हिलती हुई स्थिति अचल हो जायेगी। तो ऐसी कम से कम सोलह पावरफुल बातें सभी को लिखनी हैं। लिखनी खुद है, मुरलियों से ढूंढकर। रोज़ की मुरलियों से। भले एक मास में लिखो, तीन मास में लिखो, वो बातें जो नशा चढ़ा दें, वो बातें जो स्थिति को श्रेष्ठ बना दें, वो बातें जो चित्त को शांत कर दें, जो भय को निकाल दें, चिंताओं को एकदम विराम लगा दें, ऐसी बातें सभी को लिखनी हैं। इनके बल से योग बल बढ़ेगा और स्थिति बहुत सुंदर हो जायेगी।

घर में बाबा का आह्वान करें...

ऐसा बहुत से भाई-बहनों ने अपने-अपने घरों में किया है। तो आप भी बापदादा का पाँच बार आह्वान किया करें। जो कर रहे हैं उनके घरों में बाबा के वायब्रेशन्स फैलते रहते हैं। अनेक बातें खत्म हो जाती हैं। सबको पता है, भगवान के वायब्रेशन्स जहाँ फैल जायें वहाँ कोई निगेटिविटी, वहाँ कोई भटकती आत्मा, कोई चिंताएं और परेशानियाँ ज़्यादा समय नहीं ठहरेंगी। इसलिए बाबा का आह्वान किया करेंगे। अब हम इस तरह बाबा का आह्वान करेंगे...। ले चलें बुद्धि को परमधाम...। बहुत एकाग्रता के साथ भगवान से मिलन का सुखद अनुभव। देखें परमधाम में सबसे ऊपर चमक रहे हैं ज्ञान सूर्य... जो हमारे खुदा दोस्त हैं। मन के सच्चे मीत... जिन्होंने आकर हमारी जन्म-जन्म की थकान मिटा दी है। जिन्होंने प्यार भरी दृष्टि देकर हमारे कष्ट हर लिये। जिसे हम युगों से ढूंढते थे, ये वही हैं... निराकार महाज्योति। चमक रहे हैं परमधाम में। बहुत प्यार से निमंत्रण दें... हे सर्वशक्तिवान... प्यार के सागर... अपना धाम छोड़कर हमारे पास आ जाओ। हमारे आह्वान पर बापदादा दोनों आ गये हमारे सम्मुख... बिल्कुल अपने सामने देखें... उनकी तेजस्वी किरणें चारों ओर फैल रही हैं... दृष्टि दे रहे हैं... बोले बच्चे, मेरे से जो चाहे ले लो... अधिकार से मांग लें जो चाहिए... परम सद्गुरू प्रसन्न हैं...। सिर पर हाथ रखकर, तथास्तु कहकर वापिस गये अपने धाम। ये बहुत सुंदर अभ्यास सभी को रोज़ अपने घरों में पाँच-पाँच बार अवश्य करना है। आप उनसे जुड़े रहेंगे और घर में आह्वान की आदत पड़ जायेगी। कोई भी ऐसी-वैसी बात अचानक हो जाये, आह्वान की आदत उसके मदद का पात्र बना देगी।

मुझे एक छोटा-सा अनुभव याद आ गया। कितनी मदद होती है बाबा की! हमलोग एक बार गये चाइना बॉर्डर की तरफ। बर्फ गिर गई। बर्फ गिर गई तो गाड़ी स्लिप होने लगी। ड्राइवर तो घबरा गया। जैसे ही स्लिप हो, और वो ब्रेक लगाये, गाड़ी अनकंट्रोल्ड घूमने लगे। एक जगह ऐसा आ गया, ब्रेक लगा दिया और गाड़ी गड्ढ़े में गिरने लगी लेफ्ट साइड में। और हम जो पाँच-सात उस बड़ी गाड़ी में बैठे थे, सबके मुख से एक साथ निकला बाबा... बाबा...। और आप हैरान होंगे, गाड़ी का लेफ्ट पहिया वहीं एक गड्ढ़ा हुआ और उसमें धंस गया। गाड़ी रुक गई। एक सेकंड के अंतर से सब नीचे होते, मृत्यु निश्चित थी। लेकिन सबको एक साथ, मैं सोच रहा था कि देखो कितना सुंदर अवसर था, सबको एक साथ संकल्प आया बाबा...। ये भी नहीं कहा, बाबा आ जाओ। उतना भी मौका नहीं था। बाबा...। और सुनवाई हो गई। तो हमें ऐसी आदत पड़ जाये। अचानक कुछ हो जाये या होने लगे, क्योंकि जब प्राकृतिक प्रकोप शुरु हो जायेंगे तो सारा खेल अचानक चलेगा। पता ही नहीं अगले मिनट क्या हो जाये! ऐसे में अगर बाबा का आह्वान होगा, बाबा की पावरफुल स्मृति हो जायेगी तो अनेक वंडरफुल अनुभव होंगे। ये भी अपने पर विजय होगी।

भुज-कच्छ(गुज.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कच्छ के व्हाइट डेज़र्ट में आयोजित महिला संत सम्मेलन में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रक्षा बहन व ब्र.कु. सुशीला बहन। साथ हैं स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्यमंत्री डॉ. भारती पवार तथा अन्य।

भिवंडी-कल्याण(महा.)। केन्द्रीय पंचायती राज मंत्री कपिल पाटिल को जन्म दिन की बधाई, ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. गौतमी बहन तथा ब्र.कु. सुनीता बहन।

इंदौर-कालानी नगर(म.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित 'सर्व धर्म सम्मेलन' में दीप प्रज्वलित करते हुए हिंदू धर्म से अविनाशी अखंड धाम से आये परम पूज्य महामंडलेश्वर श्री 1008 डॉ. चेतन स्वरूप स्वामी जी, मुस्लिम धर्म से खजराना मस्जिद से आये मौलाना साहेब, गयासुद्दीन जॉय टेस्टी जी, सिख धर्म से गुरुद्वारा इमली साहिब से आये ज्ञानी बलबीर सिंह जी, ईसाई धर्म से न्यू एपोस्टोलिक चर्च से आये हरिसन करौली जी, ब्र.कु. जयंती दीदी, पूर्व राज्यमंत्री योगेन्द्र महंत, ब्र.कु. सुजाता बहन तथा अन्य।

खरगोन-म.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वज फहराने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में शहर के गणमान्य नागरिकों सहित सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. किरण बहन, ब्र.कु. अशोक तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

भिलाई-छ.ग.। हरिभूमि समाचार पत्र एवं बोल बम सेवा समिति द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री अनिला भेड़िया, भिलाई सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

महासमुंद-छ.ग.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सफाई कर्मचारियों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति बहन। इस मौके पर आशीष तिवारी,सीएमओ,नगरपालिका महासमुंद तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

नखत्राणा-कच्छ(गुज.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वज फहराने के पश्चात् प्रतिज्ञा कराते हुए ब्र.कु. रक्षा बहन। साथ हैं विधायक प्रद्युमन सिंह जाडेजा तथा ब्र.कु. किरण बहन।

इंदौर-कालानी नगर(म.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वज के नीचे प्रतिज्ञा करते हुए नायक समाज के प्रदेश अध्यक्ष विजय पंवार, वार्ड क्रमांक 3 के पार्षद प्रतिनिधि नितिन मालू, नगर निगम इंजीनियर आशुतोष शर्मा, खंड पंचायत अधिकारी कौशल नन्द, रियल एस्टेट कारोबारी जगदीश सत्रवाला, वार्ड क्रमांक 3 के जन अभियान अध्यक्ष हरीश सोनी, मंडी इंस्पेक्टर रमेश शारदीया, ब्र.कु. जयंती दीदी, ब्र.कु. सुजाता दीदी तथा अन्य।

अम्बिकापुर-चोपड़ापारा(छ.ग.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत संभागीय स्तर पर आयोजित उद्घाटन कार्यक्रम में पूर्व पार्षद,अग्रसेन गौ सेवा सदन के अध्यक्ष कर्ताराम गुप्ता, राजमोहिनी देवी कृषि महाविद्यालय के पूर्व अधिष्ठाता वी.के. सिंह, अम्बिकापुर जेल अधीक्षक राजेन्द्र गायकवाड़, राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम के प्रभारी अधिकारी ई.एन.टी. विशेषज्ञ डॉ. शैलेन्द्र गुप्ता, सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी, सामाजिक कार्यकर्ता पूर्व सम्प्रेक्षण गृह अधीक्षिका वंदना बहन, डॉ. लता गोयल, पार्वती शिक्षा महाविद्यालय मदनपुर सिलफिली संस्थापक एवं प्रबंधक अशोक नाथ तिवारी, राकेश तिवारी तथा शहर के अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

राजकोट-पडधरी(गुज.)। महाशिवरात्रि पर आयोजित द्वादश ज्योतिर्लिंग एवं शिवलिंग अभिषेक का दर्शन करते हुए शहर के लोगों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में एडिशनल डीएसपी सारिका पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भावना बहन।

'समाधानपरक मीडिया से समृद्ध भारत की ओर' राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन

आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत अखिल भारतीय अभियान का शुभारंभ

भोपाल-गुलमोहर कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग एवं मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति द्वारा उद्यमिता विकास केन्द्र,अरेरा हिल्स भोपाल में आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'समाधानपरक मीडिया से समृद्ध भारत की ओर' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस दौरान दिवंगत प्रो. कमल दीक्षित जी की प्रथम पुण्य तिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर उनकी शिक्षाओं को याद किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए भारतीय जनसंचार संस्थान के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि पत्रकारिता सिर्फ सवाल खड़े न करे बल्कि समाधान भी खोजे। ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.सुशांत ने सम्मेलन के विषय पर प्रकाश डाला एवं अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा स्पष्ट की। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रीना बहन ने बताया कि कमल दीक्षित जी

के प्रयासों के फलस्वरूप मध्य प्रदेश के मीडिया में प्रकाशित सकारात्मक खबरों में लगातार वृद्धि होती गई। भोपाल ज़ोन की क्षेत्रीय प्रमुख राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी ने कहा कि हमें स्वयं से बदलाव का आरंभ करना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज़,इंदौर की मुख्य क्षेत्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमा दीदी ने कहा कि मीडिया प्रभाग के पूर्व अध्यक्ष ओम प्रकाश भाई जी एवं कमल दीक्षित जी ने मिलकर मीडिया सेवाओं को एक नई दिशा दी। दूरदर्शन भोपाल न्यूज़ विभाग प्रमुख पद से सेवानिवृत्त पत्रकार विनोद नागर, स्वदेश समाचार पत्र के प्रधान संपादक एवं पत्रकारिता भूषण से सम्मानित वरिष्ठ पत्रकार राजेंद्र शर्मा, पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी ऑफ इंडिया भोपाल चैप्टर के अध्यक्ष एवं मध्य प्रदेश भोपाल के ओएसडी पुष्पेंद्र पाल सिंह, अनिल सौमित्र,क्षेत्रीय निदेशक,भारतीय जनसंचार संस्थान, प्रो. पवित्र श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष,विज्ञापन एवं जनसम्पर्क विभाग माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल सहित मीडिया जगत से जुड़े अनेक महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. रावेन्द्र भाई एवं ब्र.कु. सोमनाथ भाई ने किया।

पत्रकारिता की समृद्धता को पैकेज से तय नहीं किया जा सकता। समृद्ध भारत तभी बन सकता है जब समूचे समाज का मानसिक स्तर अच्छा बने - *राज्यसभा टीवी के पूर्व कार्यपालक निदेशक राजेश बादल*

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एक आदर्श संस्थान है। एक अच्छे राष्ट्र और समृद्ध भारत की परिकल्पना समाधान के माध्यम से ही संभव है - *माखनलाल विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. राखी तिवारी*

मीडिया अगर सकारात्मक रहे तो समाज भी सकारात्मक बना रहेगा। मैंने अपने समाचार पत्र के फ्रंट पेज पर पिछले कई वर्षों से निगेटिव खबर नहीं छापी और इससे अखबार की सेलिंग पर कोई फर्क नहीं पड़ा - *वरिष्ठ पत्रकार एवं देशोन्नति समाचार पत्र के संपादक राजेश राजौरे,महाराष्ट्र*

युवा पीढ़ी को नशे से बचाने के लिए महिलाएं आगे आएं

'महिलाएं : नये भारत की ध्वज वाहक' विषय पर महिला जागृति आध्यात्मिक कार्यक्रम

रायपुर-छ.ग.। महिला, बाल विकास एवं समाज कल्याण राज्यमंत्री श्रीमति अनिला भेड़िया ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी नशे की तरफ बढ़ रही है। इन्हें रोकने के लिए महिलाओं को आगे

आना होगा। नशे को जड़ से खत्म करने के लिए अपने घर से शुरुआत करनी होगी। श्रीमति भेड़िया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शान्ति सरोवर में 'आज़ादी के अमृत महोत्सव' के अंतर्गत 'महिलाएं : नये भारत की ध्वज वाहक' विषय पर आयोजित महिला जागृति आध्यात्मिक कार्यक्रम को सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी जो कि भटक कर गलत दिशा में जा रही है, उन्हें अच्छे से संस्कारित कर उनका मार्गदर्शन करने का सराहनीय कार्य ब्रह्माकुमारी बहनें कर रही हैं। लोकसभा सांसद श्रीमति ज्योत्सना महन्त ने कहा कि महिलाएं परिवार की नींव होती हैं। आज संयुक्त परिवार में नहीं रहने के कारण पहले बच्चों को बड़े बुजुर्गों से जो अच्छी बातें सीखने को मिलती थीं उसका आज अभाव हो गया है। इसलिए उन्होंने कोरबा के स्कूलों में लड़कियों को सम्माननीय समझने की शिक्षा देने की शुरुआत की है। राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमति किरणमयी नायक ने कहा कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के नारे की जगह अब आवश्यक है कि बेटी को इतना सशक्त बनाओ कि वह अपनी रक्षा खुद कर सके। ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी ने कहा कि वर्तमान समय संसार में समस्याओं की भरमार है, इसलिए ऐसे समाज में रहने के लिए जीवन में आध्यात्मिकता का होना ज़रूरी है। इससे जीवन में सहनशीलता, नम्रता, मधुरता आदि दैवी गुण आते हैं और अनेक शक्तियाँ आती हैं जिससे हम स्वयं ही स्वयं को सुरक्षित भी रख सकते हैं। हेमचन्द यादव विश्वविद्यालय दुर्ग की कुलपति डॉ. अरुणा पल्टा ने कहा कि महिलाएं अगर किसी चीज़ को ठान लें तो उन्हें हराया नहीं जा सकता। बस वे तनाव न लेकर सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें। राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. अदिति बहन ने कहा कि महिलाओं को पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण नहीं करना चाहिए बल्कि अपने जीवन में भौतिकता और आध्यात्मिकता का संतुलन बनाकर चलना चाहिए। इस अवसर पर स्थानीय गायिका कु. शारदा नाग ने मधुर स्वर में गीत प्रस्तुत कर और बाल कलाकारों ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. रश्मि बहन ने किया।

शिव के दिव्य अवतरण का यादगार 'शिवरात्रि'

'स्वर्णिम भारत के निर्माण में संत महात्माओं का योगदान' कार्यक्रम

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। जब आत्माओं के निजी गुण सुख, शांति, पवित्रता एवं शक्तियां आदि क्षीण हो जाती हैं और हम अपने देवत्व को, धर्म की धारणा को भूल अनैतिक कर्म करने लगते हैं तब इस घोर पापाचार, भ्रष्टाचार की अंधियारी रात्रि में परमात्मा शिव का दिव्य

अवतरण होता है, इसकी यादगार में हम महाशिवरात्रि मनाते हैं। उक्त उद्गार 'महाशिवरात्रि' एवं 'आज़ादी के अमृत महोत्सव' के अंतर्गत 'स्वर्णिम भारत निर्माण में संत महात्माओं का योगदान' विषय पर संत महात्माओं के लिए आयोजित कार्यक्रम में छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन ने व्यक्त किये। निर्मोही अखाड़ा राष्ट्रीय पंच,चित्रकूट कामदगिरि पीठ के महामंत्री महंत श्री भगवान दास जी ने कहा कि भारत सच में स्वर्णिम भारत था और ब्रह्माकुमारीज़ ने आगे किया तभी यह संस्था एक बड़ी शक्ति बनकर सामने आई। इस मौके पर जानराय टौरिया पुजारी पंडित हरिकेश बाबाजी, संकट मोचन मंदिर से पंडित नागा सुरेंद्र दास जी, गुरुद्वारा से गुरचरण सिंह जी, गायत्री मंदिर से जिला समन्वयक पंडित बृजेश त्रिपाठी जी, सिद्ध गणेश मंदिर से इंद्रपुरी गोस्वामी जी, पूर्व चंदला विधायक आर.डी. प्रजापति तथा पीतांबरा शक्ति पीठ से पंडित श्री बृजेश तिवारी आदि प्रबुद्ध जन सहित लगभग 500 श्रद्धालुजन उपस्थित रहे।

श्रेष्ठ विचारों द्वारा अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाकर ही सुंदर बनता है मनुष्य

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा केन्द्रीय जेल अम्बिकापुर में 'आध्यात्मिक प्रवचन' कार्यक्रम

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा केन्द्रीय जेल अम्बिकापुर में आयोजित 'आध्यात्मिक प्रवचन' कार्यक्रम में कैदी भाइयों को सम्बोधित करते हुए सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी ने कहा कि मनुष्य अपने कर्मों से सुंदर बनता है इसलिए मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करना चाहिए जिससे उसकी सुंदरता सदा बनी रहे, इसका आधार है श्रेष्ठ विचार। जितना हम अपने विचारों को श्रेष्ठ बनायेंगे उतना हमारा कर्म श्रेष्ठ बनेगा और जब कर्म श्रेष्ठ बनेगा तभी हम महान बनेंगे। उन्होंने कहा कि सदा ये ध्यान रहे कि भगवान हमें देख

रहा है, तो हमारा अपने कर्मों पर अटेंशन रहेगा और हमसे श्रेष्ठ कर्म ही होंगे। तत्पश्चात् उन्होंने कैदी भाइयों के मन की अशांति एवं तनाव को दूर करने के लिए राजयोग की गहन अनुभूति करायी। जेल अधीक्षक राजेन्द्र गायकवाड़ ने कहा कि जब व्यक्ति के अंदर आवश्यकता से अधिक अपेक्षायें बढ़ जाती हैं तो उससे असंतुष्टि आती है। इसी असंतुष्टि के कारण जीवन में दुःख, अशांति, परेशानी, चिंता और आलस्य की उत्पत्ति होती है और यही मन को इतना खराब कर देता है कि वो अपराध करने के लिए भी बाध्य हो जाता है। इससे बचने के लिए श्रेष्ठ कर्म करें और नित्य प्रभु को प्रेम से याद करें तो निश्चित रूप से जीवन परिवर्तित हो जायेगा। सहायक जेल अधीक्षक हिरेन्द्र ठाकुर ने कहा कि हम ब्रह्माकुमारी संस्था के साथ सदा जुड़े रहेंगे और उनके आदर्शों पर चलते रहेंगे, क्योंकि इस संस्था में कोई भेदभाव, कोई स्वार्थ नहीं है, यहाँ इंसान को श्रेष्ठ बनने का स्वरूप एवं आत्मा को परमात्मा से जोड़ने की विधि सिखाते हैं। कैदी गुरूप्रीत भाई ने जेल अधीक्षक एवं ब्र.कु. विद्या दीदी का आभार एवं शब्दों के द्वारा सम्मान करते हुए सुंदर प्रार्थना का गीत गाया जिससे सभी कैदी भाइयों के मन में भगवान के प्रति प्रेम, विश्वास, आस्था और निष्ठा जागृत हो।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd April, 2022
स्वामी - राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन, प्रकाशक एवं सम्पादक - गंगाधर नरसिंघानी, मुद्रक - श्री मुकेश मंगल, डी.बी. कॉर्प.लि. द्वारा भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड(राज.)- 307510
See Latest News - www.omshantimedia.org